हरिभूमि
रेवाड़ी भूमि
रोहतक, रविवार 19 जुलाई 2026

तापमान
अधिकतम 37.0 डिग्री
न्यूनतम 29.2 डिग्री

10 शहर के छह वार्डों में दूषित पेयजल सप्लाई बनी...

10 बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए पौधरोपण समय की...

AIT KANINA PHARMACY COLLEGE
Approved by : AICTE & PCI, New Delhi
पॉलिटेक्निक करें नौकरी पाएं
B.PHARM (4 YEARS) D.PHARM (2 YEARS) 2 YEARS COURSE
ADMISSION OPEN
For Session 2026-27
Eligibility : 10+2 Pass (Medical & Non-Medical) सीटें सीमित
पता : AIT Pharmacy College गाहड़ा रोड, कनीना Mob. : 9992696300, 9466464921

खबर संक्षेप

आर्म्स एक्ट का आरोपी भेजा गया जेल

रेवाड़ी। सीआईए के हत्थे चढ़े आर्म्स एक्ट के आरोपी को कोर्ट में पेश करने के बाद जेल भेज दिया गया। सीआईए ने सूचना के आधार पर नांधा निवासी विकास को माजरा फ्लाईओवर के पास देशी पिस्टल के साथ गिरफ्तार किया था। सीआईए ने काबू करने के बाद उसे थाना खोल पुलिस के हवाले किया गया था। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज करने के बाद उसे कोर्ट से एक दिन के रिमांड पर लिया था।

सड़क हादसे का आरोपी चालक गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने सड़क हादसे के बाद फरार एक वाहन चालक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने 14 जून को दिल्ली-जयपुर नेशनल हाइवे पर हुए हादसे के बाद घायल के बयान पर केस दर्ज किया था। हादसे के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया था। पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद आरोपी का पता लगाने के प्रयास शुरू किए थे। जांच के बाद पुलिस ने बिहार के नरसिंपुरा निवासी आमोद कुमार को गिरफ्तार कर लिया। उसका वाहन भी पुलिस ने कब्जे में ले लिया।

महिला को बंदी बनाने का आरोपी गिरफ्तार

कोसली। पुलिस ने एक महिला को होटल के कमरे में बंदी बनाकर रखने के मामले में आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। झज्जर के एक गांव निवासी महिला ने पुलिस शिकायत में बताया था कि उसे नूंह के रंगाला निवासी ललित ने दस्तावेजों पर साइन करने के लिए बुलाया था। बाद में उसे कमरे में बंधक बनाकर मारपीट की। उसने अपने पति को सूचना दी। इसके बाद पुलिस ने उसे मुक्त कराया। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ केस दर्ज करने के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया।

मारपीट मामलों में तीन आरोपी गिरफ्तार

रेवाड़ी। पुलिस ने मारपीट करने और जान से मारने की धमकी देने के मामलों में तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। जाटूसाना थाना पुलिस ने पीड़ित के बयान पर 16 जुलाई को विभिन्न धाराओं के तहत केस दर्ज किया था। इस मामले में पुलिस ने कुमरोधा निवासी बिजेंद्र को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया।

कोसली क्षेत्र के गांव से विवाहिता लापता

कोसली। क्षेत्र के गांव से विवाहित बिना किसी को कुछ बताए घर से लापता हो गई। महिला के पति ने नाहड़ पुलिस चौकी में दी शिकायत में बताया कि उनकी पत्नी 12 जुलाई शाम से घर से लापता है। उन्होंने अपनी रिश्तेदारी व आसपास के सभी स्थानों पर खोजबीन की लेकिन अभी तक उसका कोई पता नहीं चल पाया है।

कैंटर की टक्कर से बाइक सवार की मौत

रेवाड़ी। दिल्ली-जयपुर हाइवे पर साबी नदी पुल के पास कैंटर की टक्कर से बाइक सवार एक युवक की मौत हो गई, जबकि उसका साथी गंभीर रूप से घायल हो गया। पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के बाद परिजनों को सौंप दिया। शुक्रवार देर सायं शुभम अपने दोस्त रजत के साथ भिवाड़ी जाने के लिए धारूहेड़ा की ओर निकला था। धारूहेड़ा पहुंचने से पहले ही साबी नदी पुल के पास कैंटर ने बाइक को टक्कर मार दी। इस हादसे में दोनों गंभीर रूप से घायल हो गए।

बादल छाने से तापमान में दर्ज हुई गिरावट, उमस भरी गर्मी ने दिन भर लोगों को छकाया

- बारिश के बिना भारी गर्मी से राहत नहीं, कल से मौसम में बदलाव के आसार

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

मौसम का मिजाज बार-बार बदल रहा है। बादल छाने के बाद बिना बरसे लौट रहे हैं, जिससे उमस भरी गर्मी जमकर परेशान कर रही है। सुबह से शाम तक लोगों को भारी गर्मी का सामना करना पड़ रहा है। तापमान में गिरावट भी गर्मी का असर कम नहीं कर पा रही है। 20 जुलाई से मानसून की बारिश शुरू होने की संभावना जताई जा रही है।

रेवाड़ी। एक खेत में लहलहाती कपास की फसल।

जल्द सक्रिय हो सकता है मानसून

मौसम विभाग के अनुसार सोमवार से मानसून एक बार फिर गति पकड़ सकता है। आने वाले सप्ताह के दौरान बार-बार बारिश होने की संभावना जताई जा रही है। रविवार की रात से ही बरसात का सिलसिला शुरू हो सकता है। इसके बाद तापमान में भी गिरावट दर्ज की जाएगी, जिससे लोगों को भारी गर्मी से राहत मिल सकती है। शनिवार को देर शाम तक आसमान में बादल गहराए हुए थे, जिससे बूंदाबांदी के आसार नजर आ रहे थे।

शनिवार को सुबह के समय आंशिक बादल छाने के बाद बिना बारिश के ही लौट गए। आसमान साफ होते ही तेज धूप निकली, जिससे वातावरण में भारी उमस बन गई। अधिकतम तापमान 1.0 डिग्री की कमी के साथ 37.0 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। न्यूनतम तापमान 0.7 डिग्री की वृद्धि के साथ 29.2 डिग्री सेल्सियस पर पहुंच गया। गत 11 जून के बाद पहली बार रात का तापमान इस स्तर पर पहुंचा है, जिससे लोगों को रात के समय भी भारी गर्मी का सामना करना पड़ा। हवा में नमी का स्तर 47 प्रतिशत तक रहने के कारण दिन भर उमस और चिपचिपाहट भरी गर्मी का प्रकोप परेशान करता रहा। उमस बढ़ते ही कूलरों की हवा तक राहत नहीं देती। शाम तक लोग पसीना-पसीना होते रहे। दोपहर बाद बादल गहराने पर बारिश की संभावना नजर आने लगी, लेकिन शाम तक बादल ही छाए रहे। लगभग एक सप्ताह से अच्छी बारिश नहीं होने के कारण लोगों को भारी गर्मी से निजात नहीं मिल पा रही है।

निगम अधिकारियों को भी बारिश का इंतजार

बिजली की खपत भारी गर्मी के चलते काफी बढ़ी हुई है। दैनिक खपत 95 लाख यूनिट तक पहुंच गया है। किसान बारिश के बिना फसल बचाने के लिए नलकूपों के पानी से सिंचाई कर रहे हैं, जिससे कृषि क्षेत्र में भी बिजली की मांग बढ़ गई है। बिजली निगम को बार-बार शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में पावर कट लगवाने पड़ रहे हैं, जिससे भारी गर्मी में लोगों को परेशानी हो रही है। निगम अधिकारी भी जल्द बारिश का इंतजार कर रहे हैं, ताकि बिजली खपत में कमी आ सके।

भटसाना एप्रोच रोड 2.5 किलोमीटर के लिए 2.17 करोड़ रुपये की मंजूरी

बावल की 32 जर्जर सड़कों का होगा सुधार, 27 करोड़ से अधिक राशि स्वीकृत

ग्रामीणों की वर्षों पुरानी मांग पर मुख्यमंत्री नायब सैनी की मोहर, 32 जर्जर सड़कों ने मिलेगी पूर्ण निजात

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। बावल विधानसभा क्षेत्र के गांव की जर्जर सड़क। फोटो : हरिभूमि

रेवाड़ी। बावल विधानसभा क्षेत्र के गांव की जर्जर सड़क।

बावल विधानसभा क्षेत्र में सड़क व्यवस्था को और बेहतर बनाने की दिशा में हरियाणा सरकार ने कदम उठाते हुए 32 सड़कों के सुदृढ़ीकरण एवं सुधार कार्यों के लिए 27.22 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है। इस सौगात के लिए बावल के विधायक डा. कृष्ण कुमार ने मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री के नेतृत्व में प्रदेश सरकार लगातार विकास कार्यों को गति दे रही है। बावल विधानसभा क्षेत्र में आधारभूत सुविधाओं को मजबूत करना उनकी प्राथमिकताओं में शामिल है। स्वीकृत राशि से क्षेत्र की सड़कों की मरम्मत, मजबूतीकरण और आवश्यक सुधार कार्य किए जाएंगे, जिससे लोगों को बेहतर आवागमन की सुविधा उपलब्ध होगी। उन्होंने कहा कि अच्छी सड़कें किसी भी क्षेत्र के विकास की महत्वपूर्ण कड़ी होती हैं। बेहतर सड़क संपर्क से ग्रामीण क्षेत्रों को भी लाभ मिलेगा और आवागमन भी सुगम होगा। उन्होंने कहा कि स्वीकृत सड़क परियोजनाओं के पूरा होने के बाद क्षेत्र के लोगों को लंबे समय से चली आ रही समस्याओं से निजात मिलेगी।

अलग खबर

जल्द ही टेंडर प्रक्रिया के बाद शुरू होगा कार्य

विधायक ने बताया कि वित्तीय वर्ष 2026-27 के कार्य में विधानसभा क्षेत्र की 32 सड़कों के विशेष मरम्मत, सुदृढ़ीकरण एवं सुधार कार्यों के लिए 27.22 करोड़ की राशि शामिल की गई है। जल्द ही टेंडर की प्रक्रिया पूरी कराकर इन सड़कों का कार्य शुरू कराया जाएगा। उन्होंने कहा कि लंबे समय से क्षेत्र के विभिन्न गांवों एवं कस्बों के लोगों की ओर से नंदरामपुर-भटसाना एप्रोच रोड सहित अन्य सड़कों के सुधार की मांग की जा रही थी। ग्रामीणों की मांग को मार्च-अप्रैल के विधानसभा सत्र में भी प्रमुखता से उठाया गया।

इन सड़कों का किया जाएगा सुधारीकरण

बावल विधानसभा क्षेत्र में 32 सड़कों को दुरुस्त किया जाएगा। भटसाना एप्रोच रोड 2.5 किलोमीटर के लिए 2.17 करोड़ रुपए की मंजूरी मिली है। हरजीपुर से नगली बलिहार रोड के लिए 1.63 करोड़, नारनौल रोड से चीताडूंगरा रोड के लिए 1.63 करोड़ और बासदुदा से कोलाना रोड के लिए 1.58 करोड़ रुपए की राशि स्वीकृत की गई है। इनके अलावा गांव नंदरामपुर बास से ततारपुर खास बास रोड, नंदरामपुर बास से राबड़का रोड राजस्थान बॉर्डर तक, बावल से ओढ़ी मोड़ वाया रेलवे फाटक, निगानियावास से जड़थल रोड, पनवाड़ गांव से अहीर भगोला, गांव नंदरामपुर बास से थारा, बखापुर एप्रोच रोड, कासोली से कोटकासिम रोड, मामाड़यिा ठेठर से ढाणी गोठड़ा, धारण गोविंदपुर से बेरवाल, रणसी माजरी से मानका रोड, काठुवास-शहबाजपुर खालसा रोड, नंगली परसापुर से नांगल शहबाजपुर, साल्हावास से कसोला, चिताडूंगरा से राजस्थान बॉर्डर, खेड़ी डालू सिंह से रामसिंहपुरा, डीजे रोड से केशोपुर, रेवाड़ी-बावल रोड से गुजरीवास रोड, बावल प्राणपुरा से टीकला पनवाड़, सहारनवास एप्रोच रोड, डीजे रोड से रामसिंहपुरा, डालियावास एप्रोच रोड, मुकुंदपुर बसई से साल्हावास, धामलावास से ठोठवाल, नांगल जमालपुर से ढाणी कोलाना, डीजे रोड से बावल रोड और बखापुर से ओढी रोड शामिल हैं।

बिना नंबर प्लेट की स्कूल बस, नशे में मिला चालक

रेवाड़ी। स्कूल बस का चालान काटते हुए पुलिसकर्मी।

- ट्रैफिक पुलिस ने मौके पर ही किया बस का चालान, विद्यार्थियों को घर तक जाना पड़ा पैदल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

राजेश पायलट चौक के पास शनिवार दोपहर बाद बच्चों को छोड़ने जा रही एक स्कूल बस नंबर प्लेट नहीं होने के कारण ट्रैफिक पुलिस ने चेकिंग के लिए रुकवा ली। चेकिंग के दौरान बस का चालक नशे में धुत मिला। पुलिस ने मौके पर ही चालान करते हुए चालक को चेतावनी देकर छोड़ दिया। इस घटना से एक बार फिर यह बात साबित हो गई है कि चालकों की नियुक्ति को लेकर स्कूल संचालक गंभीरता नहीं दिखाते, जिससे कभी भी बच्चों की जान जोखिम में पड़ सकती है।

स्कूल की छुट्टी होने के बाद एक नई बस विद्यार्थियों को छोड़ने के लिए स्कूल से निकली थी। जब यह बस सेक्टर-18 के सामने पहुंची, तो आगे-पीछे नंबर प्लेट नहीं होने के कारण ट्रैफिक पुलिस ने बस रुकवा ली। चालक से बस के कागज दिखाने को कहा, तो उसके पास कागज नहीं मिले। एल्कोहल मीटर से चेक करने पर चालक नशे में धुत मिला। पुलिस ने बस का मौके पर ही चालान कर दिया। बाद में पता चला कि बस नई निकलवाई गई है, जिसकी नंबर प्लेट नहीं आई है। इसके बावजूद टेंपरेरी नंबर की प्लेट नहीं लगाना ट्रैफिक नियमों की उल्लंघना होता है, जिसके चलते बस का चालान कर दिया गया। बस काफी देर तक पायलट चौक के पास खड़ी रही। इस दौरान आसपास के विद्यार्थी बस से उतरकर पैदल ही अपने घरों की ओर निकल गए। दूर जाने वाले कुछ विद्यार्थी और एक महिला टीचर बस छूटने का इंतजार करते रहे।

नियमों की उल्लंघना पर होगा एक्शन

स्कूल संचालकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि बस चालक बच्चों को लाते और ले जाते समय नशीले पदार्थ का इस्तेमाल नहीं करें। ऐसा करने से बच्चों की जान जोखिम में पड़ जाती है। ट्रैफिक पुलिस स्कूल बसों की नियमित चेकिंग कर रही है। पकड़े जाने पर नियमानुसार कार्रवाई की जाती है।
-**पवन कुमार**, डीएसपी ट्रैफिक।

परिवार को बंधक बना लाखों के गहने ले गए चोर

रेवाड़ी। रसूली गांव में चोर शुक्रवार की रात एक ट्रांसपोर्टर के परिवार को कमरे में बंद करने के बाद लाखों रुपये के जेवरात पर हाथ साफ कर गए। सदर थाना पुलिस ने उसकी शिकायत के बाद मौका मुआयना करते हुए चोरी का केस दर्ज कर लिया। रसूली निवासी आकाश ने पुलिस शिकायत में बताया कि वह ट्रांसपोर्टर का कार्य करता है। रात को वह अपने परिवार के साथ कमरे में सो रहा था। सुबह जब वह और परिवार के सदस्य उठे तो कमरा बाहर से बंद था। उसने पड़ोसी को फोन कर कमरा खुलवाया। कमरे से बाहर निकलने के बाद उसने पास के कमरे में देखा तो ताला टूटा हुआ था। चोर कमरे की अलमारी से लगभग 10 लाख रुपये के जेवर चोरी कर ले गए। अलमारी में रखी नकदी भी गायब मिली। उसकी सूचना पर थाना सदर पुलिस मौके पर पहुंच गई। मकान तक पहुंचने के लिए चोरों ने गली में लगी ग्रिल को तोड़ दिया। इसके बाद वह मकान तक पहुंचे।

सीबीआई अफसर महिला से 4.39 लाख की ठगी का एक आरोपी काबू

रेवाड़ी। यादव नगर में रह रही मूल रूप से लूला अहीर निवासी एक महिला से सीबीआई अफसर बनकर 4.39 लाख की ठगी करने के मामले में साइबर थाना पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। उसे कोर्ट में पेश करने के बाद न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया। साइबर थाना पुलिस को दर्ज शिकायत में ज्योति यादव ने बताया था कि उसके मोबाइल फोन पर गत 26 मई को व्हाट्स एप कॉल आई थी। कॉल करने वाले ने खुद को सीबीआई से बताते हुए कहा था कि उसकी सहेली को मुंबई एयरपोर्ट से गिरफ्तार किया गया है। उसके पास से सोना और ड्रग्स बरामद हुई हैं। उसने इस मामले में उसकी भी भूमिका बताई है। उसकी बात सुनकर वह घबरा गई। इसके बाद उसके पास अलग-अलग नंबरों से कॉल आईं। उसे बताया गया कि तुम्हारे घर पर सीबीआई रेड करेगी। इसके बाद कॉल करने वाले लोगों ने उससे पैसे मांगने शुरू कर दिए। उसने जून माह तक अलग-अलग ट्रांजेक्शन के जरिए 4.39 लाख रुपये उनके बताए गए खाता नंबरों पर ट्रांसफर कर दिए। इसके बाद और पैसों की मांग करने पर उसे ठगी का अहसास हुआ। जांच के बाद पुलिस ने इस मामले में अम्बाला कैंट के गुरू नानक नगर एकता विहार निवासी कर्ण राजपूत को गिरफ्तार कर लिया।

खोल खंड में सड़कों के पुनर्निमाण को मंजूरी मिलने पर जताया आभार

रेवाड़ी। खोल खंड के कई गांवों की सड़कों के पुनर्निमाण को सरकार की मंजूरी पर खुशी जाहिर करते हुए प्रबुद्ध लोगों ने प्रदेश सरकार और नेताओं का आभार व्यक्त किया है। इन सड़कों के पुनर्निमाण की मांग काफी समय से की जा रही थी। भाजपा खोरी मंडल अध्यक्ष व रामपुरा के सरपंच नरेश यादव, प्रदीप ठेकेदार नारायणपुर, भाजपा खोल मंडल अध्यक्ष सुभाष यादव, दिनेश यादव टींट आदि ने बताया कि प्रदेश सरकार की ओर से चीताडूंगरा रोड, बासदुधा से कोलाना रोड, धमलावास से ठोठवाल रोड तथा नांगल जमालपुर से कोलाना रोड की मरम्मत को मंजूरी प्रदान की है। इन सड़कों की मरम्मत से क्षेत्र के हजारों लोगों को बेहतर एवं सुरक्षित आवागमन की सुविधा मिलेंगी। बासदुधा से कोलाना और नांगल जमालपुर से कोलाना तक सड़क मरम्मत के लिए 5. 36 करोड़ रुपए मंजूर किए गए हैं। खोल एवं खोरी मंडल तथा समस्त क्षेत्रवासियों की ओर से प्रदेश के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी, केंद्रीय मंत्री राव इंद्रजीत सिंह, स्वास्थ्य मंत्री आरती राव तथा विधायक डॉ. कृष्ण कुमार का आभार व्यक्त किया गया है। खोरी मंडल अध्यक्ष सरपंच नरेश यादव ने कहा कि प्रदेश की नायब सिंह सैनी सरकार बिना किसी भेदभाव के विकास करा रही है। बावल और खोरी मंडलों में कई सड़कों की हालत खराब बनी हुई है। इन सड़कों के निर्माण की मांग काफी समय से की जा रही थी, जिस पर सरकार ने अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी है। ग्रामीणों को सड़कों के निर्माण से काफी फायदा मिलेगा।

कोई भी सरकारी एजेंसी वीडियो कॉल से नहीं करती डिजिटल अरेस्ट

साइबर अपराधी रोजाना बदल रहे ठगी के तरीके : एसपी

साइबर ठगी का शिकार होने पर नागरिक हेल्पलाइन नंबर 1930 पर करें काल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

एसपी हमेंद्र मीणा।

पुलिस अधीक्षक हेमेंद्र कुमार मीणा ने जिले के नागरिकों को बढ़ते साइबर अपराधों के प्रति सतर्क रहने की अपील करते हुए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने कहा कि साइबर ठग लगातार नए-नए तरीके अपनाकर लोगों को अपने जाल में फंसा रहे हैं। एसपी ने कहा कि थोड़ी सी लापरवाही आपकी जीवनभर की कमाई को नुकसान पहुंचा सकती है। एसपी ने कहा कि पुलिस साइबर अपराधों की रोकथाम के लिए लगातार कार्रवाई के साथ-साथ जन जागरूकता अभियान चला रही है। आमजन यदि समय रहते सावधानी बरतें तो अधिकांश साइबर अपराधों से बचा जा सकता है। कोई भी पुलिस अधिकारी, सीबीआई, ईडी, आयकर विभाग या अन्य सरकारी एजेंसी वीडियो कॉल के माध्यम से किसी नागरिक को डिजिटल अरेस्ट नहीं करती। यदि कोई स्वयं को अधिकारी बताकर डराए या पैसे मांगे तो तुरंत कॉल काट दें। केवल अधिकृत ई-कॉमर्स प्लेटफॉर्म से ही खरीदारी करें।

बच्चों और बुजुर्गों को भी करें जागरूक

घर के बुजुर्गों और बच्चों को भी साइबर ठगी के तरीकों के बारे में जानकारी दें ताकि वे किसी झांसे में न आएं। एसपी हेमेंद्र कुमार मीणा ने कहा कि यदि किसी व्यक्ति के साथ साइबर धोखाधड़ी हो जाती है तो घबराएं नहीं, बल्कि तुरंत कार्रवाई करें। जितनी जल्दी शिकायत दर्ज होगी, ठगी गई राशि वापस मिलने की संभावना उतनी अधिक होगी। उन्होंने नागरिकों से अपील की कि साइबर अपराध होने पर तुरंत राष्ट्रीय साइबर हेल्पलाइन 1930 पर कॉल करें तथा राष्ट्रीय साइबर अपराध रिपोर्टिंग पोर्टल साइबरक्राइम.जीओवी.इन पर शिकायत दर्ज करें।

ओटीपी, बैंक पिन और सीवीवी साझा न करें

बैंक, आरबीआई या कोई सरकारी संस्था कभी भी फोन या मैसेज पर ओटीपी, एटीएम पिन, सीवीवी, नेट बैंकिंग पासवर्ड या यूपीआई पिन नहीं मांगती। यदि कोई व्यक्ति एनी डेस्क, टीम व्यूअर, क्विक स्पोर्ट या अन्य स्क्रीन शेयरिंग ऐप डाउनलोड कराने का प्रयास करे तो सावधान रहें। ऐसे ऐप के जरिए ठग आपके बैंक खाते तक पहुंच सकते हैं। याद रखें, पैसे प्राप्त करने के लिए कभी भी क्यूआर कोड स्कैन नहीं करना पड़ता। क्यू आर कोड स्कैन करने पर खाते से पैसे कट सकते हैं।

SOMANY EDUCATIONAL INSTITUTIONS
25+ YEARS
* Somany Institute of Technology and Management * Somany College of Pharmacy
ADMISSIONS OPEN
COURSES OFFERED
SITM Courses
• B.Tech (CSE, ME, ECE, PT)
• M.Tech (CSE, ME, ECE, PT)
• BBA • BCA • MBA
SCP Courses
• D.Pharma
• B.Pharma
Upto 100% Scholarship
Facilities
• Experienced Faculty
• Modern Infrastructure
• Well Equipped Labs
• Placement Assistance
• Holistic Development
Delhi - Jaipur Highway, NH - 48, Near Rewari City Sector 26
www.somanyncr.in | www.somanycollegeofpharmacy.in
ADMISSION HELPLINE 9541069998 | 01274-261239 | 9034717734 | 7082539268

मिड या स्मॉल-कैप फंड: 10 साल में किसने दिखाया दम

दोनों श्रेणियों ने दिया शानदार रिटर्न, लेकिन जोखिम और उतार-चढ़ाव में मिड-कैप

दोनों का निफ्टी-50 से बेहतर रहा प्रदर्शन

- सिर्फ ज्यादा रिटर्न पर न करें फैसला, पहले जोखिम व वोलैटिलिटी भी समझें
- स्मॉल-कैप ने बेंचमार्क को पीछे छोड़ा, मिड-कैप कम जोखिम संग बेहतर
- विशेषज्ञ बोले, गिरावट से घबराने के बजाय विविधीकृत पोर्टफोलियो अपनाएं
- दोनों फंडों में संपत्ति बनाने की क्षमता, लेकिन क्षमता के अनुसार करें फैसला
- विविधीकरण और लंबी अवधि बेहतर रिटर्न दिलाने की सबसे कारगर रणनीति

निवेश मंत्रा
बिजनेस डेस्क

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वाले अधिकांश निवेशकों के सामने सबसे बड़ा सवाल होता है कि लंबी अवधि के लिए मिड-कैप फंड चुनें या स्मॉल-कैप फंड। दोनों श्रेणियों ने पिछले एक दशक में शानदार रिटर्न दिए हैं और निवेशकों की संपत्ति में उल्लेखनीय वृद्धि की है। हालांकि, सिर्फ रिटर्न देखकर निवेश का फैसला करना सही नहीं होता। किसी भी निवेश विकल्प का चयन करते समय उसके जोखिम, उतार-चढ़ाव, निवेश अवधि और वित्तीय लक्ष्य को भी ध्यान में रखना जरूरी है। एक रिपोर्ट के अनुसार पिछले 10 वर्षों में मिड-कैप और स्मॉल-कैप दोनों श्रेणियों ने लंबी अवधि के निवेशकों को आकर्षक रिटर्न दिया है। जहां स्मॉल-कैप फंड का औसत 10 वर्षीय वार्षिक रिटर्न (सीएजीआर) 16.69 प्रतिशत रहा, वहीं मिड-कैप फंड ने 16 प्रतिशत का औसत रिटर्न दिया। यानी दोनों के बीच रिटर्न का अंतर बहुत अधिक नहीं है, लेकिन जोखिम और प्रदर्शन के तरीके में स्पष्ट अंतर दिखाई देता है।

स्मॉल-कैप ने बेंचमार्क को पछाड़ा

आंकड़ों के अनुसार, स्मॉल-कैप फंड अपने बेंचमार्क बीएसई 250 स्मॉलकैप टोटल रिटर्न इनडेक्स से बेहतर प्रदर्शन करने में सफल रहे। दूसरी ओर, मिड-कैप फंड अपने बेंचमार्क बीएसई 150 मिडकैप टोटल रिटर्न इनडेक्स से थोड़ा पीछे रहे। इससे यह संकेत मिलता है कि स्मॉल-कैप फंड मैनेजरों ने बेहतर स्टॉक चयन के जरिए अतिरिक्त रिटर्न (अल्फा) बनाने में सफलता हासिल की। 10 वर्षों के प्रदर्शन में निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप डायरेक्ट, क्वांट स्मॉल कैप, एक्सिस स्मॉल कैप और एसबीआई स्मॉल कैप जैसे फंड शीर्ष प्रदर्शनकर्ताओं में शामिल रहे। वहीं मिड-कैप श्रेणी में इनवेस्को इंडिया मिड कैप, एडलवाइस मिड कैप, निप्पॉन इंडिया ग्रोथ और कोटक मिडकैप फंड ने बेहतरीन प्रदर्शन किया।

रिटर्न के साथ जोखिम भी समझें

अक्सर निवेशक केवल अधिक रिटर्न देखकर निवेश कर देते हैं, जबकि वास्तविक तस्वीर जोखिम के आंकड़ों से सामने आती है। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों के अनुसार, स्मॉल-कैप फंड का स्टैंडर्ड डिविएशन 20.33 प्रतिशत रहा, जबकि मिड-कैप फंड का यह आंकड़ा 17.88 प्रतिशत था। इसका मतलब है कि स्मॉल-कैप फंड में कीमतों का उतार-चढ़ाव ज्यादा रहा और इनमें निवेश करने वालों को अधिक अस्थिरता का सामना करना पड़ा। इसी तरह जोखिम के मुकाबले मिलने वाले रिटर्न को मापने वाले शार्प रेशियो में भी मिड-कैप फंड आगे रहे। मिड-कैप फंड का शार्प रेशियो 0.79 रहा, जबकि स्मॉल-कैप फंड का 0.69। इसका अर्थ है कि मिड-कैप फंड ने अपेक्षाकृत कम जोखिम लेकर बेहतर जोखिम-समायोजित रिटर्न दिया। हालांकि दोनों श्रेणियों का सॉर्टिनो रेशियो समान रहा, जिससे स्पष्ट होता है कि डाउनसाइड जोखिम को ध्यान में रखने पर दोनों का प्रदर्शन लगभग बराबर रहा।

लंबी अवधि के निवेशकों को मिला फायदा : विशेषज्ञों का मानना है कि पिछले 10 वर्षों की सबसे बड़ी सीख यही है कि जिन्होंने बाजार की गिरावट के दौरान घबराकर निवेश नहीं निकाला और लंबे समय तक निवेश बनाए रखा, उन्हें दोनों श्रेणियों में शानदार रिटर्न मिला। बाजार में गिरावट हर चक्र का सामान्य हिस्सा है और इसे निवेश यात्रा का स्वाभाविक चरण माना जाना चाहिए। मिड-कैप और स्मॉल-कैप फंड को केवल अधिक उतार-चढ़ाव के कारण नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। लंबी अवधि में दोनों श्रेणियों ने निफ्टी 50 से बेहतर प्रदर्शन किया है और निवेशकों के लिए अच्छी संपत्ति बनाने की क्षमता दिखाई है।

विविधीकरण सबसे बेहतर रणनीति

विशेषज्ञों का कहना है कि पूरे निवेश को केवल स्मॉल-कैप या केवल मिड-कैप में लगाना समझदारी नहीं है। बेहतर रणनीति यह है कि निवेशकों का पोर्टफोलियो सभी मार्केट कैप में संतुलित रूप से विभाजित हो। उदाहरण के तौर पर यदि किसी निवेशक के 10 लाख रुपये पूरी तरह स्मॉल-कैप फंड में लगे हों और बाजार में गिरावट आए, तो पूरे पोर्टफोलियो पर उसका असर पड़ेगा। जबकि यदि पोर्टफोलियो में लगभग 55 प्रतिशत लार्ज-कैप, 23 प्रतिशत मिड-कैप और 22 प्रतिशत स्मॉल-कैप का संतुलित निवेश हो, तो बाजार की गिरावट का प्रभाव काफी कम हो सकता है। यही कारण है कि वित्तीय योजनाकार हमेशा विविधीकरण को सफल निवेश की सबसे महत्वपूर्ण रणनीति मानते हैं।

किस निवेशक के लिए कौन सा फंड?

यदि आपकी निवेश अवधि 7 से 10 वर्ष या उससे अधिक है और आप बाजार के उतार-चढ़ाव को सहन कर सकते हैं, तो स्मॉल-कैप फंड आपके पोर्टफोलियो में बेहतर वृद्धि की संभावना जोड़ सकते हैं। वहीं यदि आप अच्छा रिटर्न चाहते हैं लेकिन अपेक्षाकृत कम जोखिम लेना पसंद करते हैं, तो मिड-कैप फंड अधिक उपयुक्त विकल्प हो सकते हैं। पहली बार निवेश करने वालों के लिए भी सलाह दी जाती है कि वे सीधे स्मॉल-कैप में बड़ी राशि लगाने के बजाय लार्ज-कैप और मिड-कैप के साथ सीमित हिस्सेदारी स्मॉल-कैप में रखें।

एसआईपी धन सृजन का सबसे प्रभावी तरीका

पिछले 10 वर्षों का रिकॉर्ड बताता है कि मिड-कैप और स्मॉल-कैप दोनों श्रेणियों ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। जहां स्मॉल-कैप फंड ने थोड़ा अधिक रिटर्न और बेहतर अल्फा दिया, वहीं मिड-कैप फंड ने कम उतार-चढ़ाव और बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन के दम पर अपनी अलग पहचान बनाई। निवेशकों को केवल अधिक रिटर्न के आकर्षण में निर्णय लेने के बजाय अपने वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के आधार पर पोर्टफोलियो तैयार करना चाहिए। नियमित एसआईपी, लंबी अवधि का नजरिया और विविधीकृत निवेश रणनीति ही धन सृजन का सबसे प्रभावी तरीका साबित हो सकती है।

बहुत ज्यादा एसआईपी से नहीं, सही रणनीति से बनेगी दौलत

नया म्यूचुअल फंड जोड़ने से पहले जांचें कि वास्तव में जरूरत है या नहीं

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में बढ़ती जागरूकता के साथ म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों की संख्या लगातार बढ़ रही है। बड़ी संख्या में निवेशक हर महीने सिस्टेमैटिक इन्वेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिए निवेश कर रहे हैं। अक्सर यह धारणा बन जाती है कि जितने अधिक म्यूचुअल फंड होंगे, उतना ही बेहतर रिटर्न मिलेगा और जोखिम कम होगा। लेकिन निवेश विशेषज्ञों का कहना है कि यह सोच हमेशा सही नहीं होती। कई बार जरूरत से ज्यादा फंड रखने से पोर्टफोलियो में एक जैसी कंपनियों का दोहराव बढ़ जाता है, जिससे वास्तविक विविधीकरण नहीं हो पाता और निवेश का उद्देश्य भी प्रभावित हो सकता है।

फंडों की संख्या नहीं, गुणवत्ता और उद्देश्य है महत्वपूर्ण

विशेषज्ञों के अनुसार, किसी निवेशक के लिए कितनी एसआईपी या कितने म्यूचुअल फंड होने चाहिए, इसका कोई तय नियम नहीं है। यह पूरी तरह निवेश राशि, वित्तीय लक्ष्य, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता पर निर्भर करता है। यदि कोई निवेशक हर महीने 10 से 15 हजार रुपये की एसआईपी करता है, तो उसके लिए चार से छह अच्छे म्यूचुअल फंड पर्याप्त हो सकते हैं। वहीं, 40 से 50 हजार रुपये या उससे अधिक की मासिक एसआईपी करने वाले निवेशक आठ से दस फंड तक रख सकते हैं। हालांकि, इन फंडों का चयन अलग-अलग श्रेणियों और अलग-अलग एसेट मैनेजमेंट कंपनियों (एएमसी) से होना चाहिए, ताकि पोर्टफोलियो में वास्तविक विविधीकरण बना रहे।

ओवर-डाइवर्सिफिकेशन से भी हो सकता है नुकसान

निवेश में विविधीकरण जरूरी है, लेकिन जरूरत से ज्यादा विविधीकरण नुकसानदेह भी हो सकता है। यदि किसी निवेशक के कई फंड एक ही तरह की कंपनियों में निवेश करते हैं, तो फंडों की संख्या बढ़ने के बावजूद जोखिम कम नहीं होता। उदाहरण के लिए यदि किसी निवेशक के पास 10 इक्विटी फंड हैं और अधिकांश फंड एचडीएफसी बैंक, रिलायंस इंडस्ट्रीज, आईसीआईसीआई बैंक जैसी बड़ी कंपनियों में ही निवेश करते हैं, तो अलग-अलग स्कीम होने के बावजूद वास्तविक निवेश लगभग समान रहेगा। ऐसे में पोर्टफोलियो केवल दिखने में बड़ा होगा, लेकिन उसमें नई विविधता नहीं जुड़ेगी।

पोर्टफोलियो ओवरलैप पर रखें नजर

म्यूचुअल फंड चुनते समय सबसे महत्वपूर्ण बात पोर्टफोलियो ओवरलैप होती है। इसका अर्थ है कि दो अलग-अलग फंडों में कितनी समान कंपनियां शामिल हैं। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि दो फंडों के बीच 20 से 30 प्रतिशत तक ओवरलैप है, तो इसे सामान्य माना जा सकता है। लेकिन यदि यह 40 से 50 प्रतिशत या उससे अधिक हो जाए, तो निवेशकों को अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करनी चाहिए। अधिक ओवरलैप का मतलब है कि अलग-अलग फंड रखने के बावजूद निवेश लगभग एक जैसी कंपनियों में ही हो रहा है।

हर नया एनएफओ खरीदना जरूरी नहीं

कई निवेशक बाजार में आने वाले हर नए म्यूचुअल फंड ऑफर (एनएफओ) में निवेश कर देते हैं। उन्हें लगता है कि नया फंड भविष्य में बेहतर रिटर्न देगा। जबकि वास्तविकता यह है कि किसी भी एनएफओ में निवेश करने से पहले उसकी निवेश रणनीति, उद्देश्य और मौजूदा पोर्टफोलियो से उसका अंतर समझना जरूरी है। यदि नया फंड वही काम कर रहा है जो पहले से मौजूद फंड कर रहे हैं, तो उसमें निवेश करना केवल दोहराव बढ़ाएगा।

संतुलित एसेट एलोकेशन है सफलता की कुंजी

विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि निवेशकों को बाजार की तेजी या गिरावट देखकर फैसले लेने से बचना चाहिए। इसके बजाय लक्ष्य आधारित निवेश रणनीति अपनानी चाहिए। इक्विटी पोर्टफोलियो में लगभग 55 प्रतिशत निवेश लार्ज कैप, 25 प्रतिशत मिड कैप और 20 प्रतिशत स्मॉल कैप फंड में रखने से संतुलन बनाया जा सकता है। इसके साथ ही जरूरत के अनुसार डेट फंड या अन्य परिसंपत्तियों में भी निवेश रखना चाहिए, ताकि बाजार में उतार-चढ़ाव का प्रभाव कम हो।

निवेशकों को मिला बड़ा फायदा

5 वर्ष में 101 इक्विटी फंड्स ने दोगुना किया निवेश

- 310 में से हर तीसरे फंड ने दिया 100% से अधिक रिटर्न
- चार स्कीमों ने सिर्फ तीन साल में किया कमाल
- पुराने रिटर्न देखकर निवेश न करें, सेक्टोरल फंड्स में लें एंट्री

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में पिछले दो वर्षों के उतार-चढ़ाव के बावजूद लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों को शानदार रिटर्न दिया है। आंकड़े बताते हैं कि पिछले पांच वर्षों में 310 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 101 फंड्स ने निवेशकों का पैसा दोगुना या उससे अधिक कर दिया। यानी हर तीन में से लगभग एक इक्विटी फंड ने 100 फीसदी से ज्यादा एब्सोल्यूट रिटर्न दिया। इतना ही नहीं, चार म्यूचुअल फंड ऐसे भी रहे जिन्होंने केवल तीन वर्षों में ही निवेशकों का पैसा दोगुना कर दिया। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि निवेश का फैसला केवल पुराने रिटर्न के आधार पर नहीं करना चाहिए, क्योंकि बाजार और सेक्टर का प्रदर्शन समय के साथ बदलता रहता है।

इंफ्रास्ट्रक्चर और पीएसयू फंड्स रहे सबसे आगे

पांच साल के प्रदर्शन पर नजर डालें तो सबसे अधिक फायदा सेक्टोरल और थीमैटिक फंड्स में निवेश करने वालों को मिला। खासतौर पर इंफ्रास्ट्रक्चर, पीएसयू, पावर और मिडकैप से जुड़े फंड्स ने जबरदस्त रिटर्न दिए।

सबसे आगे आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंफ्रास्ट्रक्चर फंड रहा, जिसने पांच साल में करीब 188 प्रतिशत का एब्सोल्यूट रिटर्न दिया। यानी एक लाख रुपये का निवेश लगभग 2.88 लाख रुपये हो गया। इसके बाद एसबीआई पीएसयू फंड और एलआईसी एमएफ इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने करीब 183 प्रतिशत का रिटर्न दिया। वहीं आदित्य बिड़ला सन लाइफ पीएसयू इक्विटी फंड ने 179 प्रतिशत, डीएसपी इंडिया टाइगर फंड ने 176.51 प्रतिशत और निप्पॉन इंडिया पावर एंड इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने लगभग 174 प्रतिशत का रिटर्न दिया। डायवर्सिफाइड मिडकैप श्रेणी में मोतीलाल ओसवाल मिडकैप फंड ने पांच वर्षों में करीब 172 प्रतिशत का रिटर्न देकर निवेशकों को शानदार कमाई कराई।

तीन साल में पैसा दोगुना करने वाले फंड

अगर केवल तीन वर्षों के प्रदर्शन को देखें तो एचडीएफसी डिफेंस फंड सबसे आगे रहा। इस फंड ने करीब 174 प्रतिशत का एब्सोल्यूट रिटर्न दिया। यानी तीन साल पहले लगाए गए एक लाख रुपये बढ़कर लगभग 2.74 लाख रुपये हो गए। इसके अलावा बंधन स्मॉल कैप फंड ने 106 प्रतिशत, क्वांट बीएफएसआई फंड ने 101.73 प्रतिशत और एलआईसी एमएफ इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने 100.24 प्रतिशत का रिटर्न देकर निवेशकों का पैसा दोगुना कर दिया। हालांकि एसबीआई पीएसयू फंड 99.12 प्रतिशत रिटर्न के साथ इस सूची में शामिल होने से मामूली अंतर से चूक गया।

किन सेक्टरों ने दिलाया सबसे ज्यादा फायदा

पिछले कुछ वर्षों में जिन सेक्टरों ने निवेशकों को सबसे अधिक लाभ पहुंचाया, उनमें डिफेंस, इंफ्रास्ट्रक्चर, पीएसयू, पावर, स्मॉलकैप, हेल्थकेयर और बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाएं (बीएफएसआई) प्रमुख रहे। इन क्षेत्रों में सरकार के पूंजीगत खर्च, रक्षा क्षेत्र में आत्मनिर्भरता, सार्वजनिक उपक्रमों के बेहतर प्रदर्शन और आर्थिक गतिविधियों में तेजी का सकारात्मक असर देखने को मिला। हालांकि विशेषज्ञों का कहना है कि सेक्टोरल फंड हमेशा एक जैसी तेजी नहीं दिखाते। इनमें तेजी और मंदी आर्थिक चक्र के अनुसार आती-जाती रहती है।

क्या अब भी इनमें निवेश करना सही रहेगा?

आनंद राठी वेल्थ के संयुक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी फिरोज अजीज का कहना है कि निवेशकों को केवल पिछले शानदार रिटर्न देखकर किसी सेक्टोरल या थीमैटिक फंड में निवेश नहीं करना चाहिए। किसी भी फंड का पिछला प्रदर्शन भविष्य में उसी तरह के रिटर्न की गारंटी नहीं देता। उनके अनुसार, सेक्टोरल फंड्स में सही समय पर निवेश करना और सही समय पर बाहर निकलना काफी महत्वपूर्ण होता है।

दो साल में कई स्टार फंड्स की रफ्तार हुई धीमी

- पांच वर्षों में शानदार प्रदर्शन करने वाले कई फंड्स का पिछले दो वर्षों का प्रदर्शन अपेक्षाकृत कमजोर रहा है।
- उदाहरण के लिए, आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल इंफ्रास्ट्रक्चर फंड ने पिछले दो वर्षों में केवल 5.28 प्रतिशत रिटर्न दिया। एसबीआई पीएसयू फंड का रिटर्न 0.75 प्रतिशत रहा, जबकि आदित्य बिड़ला सन लाइफ पीएसयू इक्विटी फंड और इनवेस्को इंडिया पीएसयू इक्विटी फंड ने इस अवधि में नकारात्मक रिटर्न दर्ज किया।
- इसी तरह एचडीएफसी इंफ्रास्ट्रक्चर फंड और डीएसपी इंडिया टाइगर फंड का प्रदर्शन भी पिछले दो वर्षों में काफी धीमा रहा। इससे साफ है कि किसी सेक्टर में तेज रैली के बाद कुछ समय तक ठहराव या गिरावट आना सामान्य बात है।

छोटी-छोटी बचत से बनाएं बड़ा फंड, भविष्य होगा सुरक्षित

- लाइफस्टाइल से समझौता किए बिना हर माह कुछ न कुछ बचत करें
- अच्छी बचत का मतलब कंजूसी नहीं, बल्कि समझदारी से खर्च करना
- आय, खर्च और निवेश के बीच संतुलन बनाया जाना जरूरी
- स्मार्ट मनी मैनेजमेंट से वर्तमान और भविष्य दोनों होंगे खुशहाल
- हर खरीदारी से पहले खुद से सवाल पूछें क्या यह वास्तव में जरूरी है

मनी मंत्रा
बिजनेस डेस्क

बढ़ती महंगाई, बदलती जीवनशैली और बढ़ते खर्चों के बीच हर व्यक्ति की सबसे बड़ी चिंता होती है कि आखिर बचत कैसे बढ़ाई जाए। आम धारणा यह है कि पैसे बचाने के लिए अपनी पसंद, शौक और मनोरंजन पर रोक लगानी पड़ती है, लेकिन वित्तीय विशेषज्ञों का कहना है कि अच्छी बचत का मतलब कंजूसी करना नहीं, बल्कि समझदारी से खर्च करना है। यदि आय, खर्च और निवेश के बीच संतुलन बनाया जाए तो बिना लाइफस्टाइल से समझौता किए हर महीने अच्छी-खासी बचत की जा सकती है। दरअसल, आज के समय में वित्तीय सुरक्षा केवल अधिक कमाई पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि कमाई का कितना हिस्सा सही तरीके से उपयोग और निवेश किया जा रहा है। यदि व्यक्ति छोटी-छोटी वित्तीय आदतों में बदलाव कर ले तो वह न केवल अपने मासिक खर्चों को नियंत्रित कर सकता है, बल्कि भविष्य के बड़े वित्तीय लक्ष्यों जैसे घर खरीदना, बच्चों की शिक्षा, रिटायरमेंट और इमरजेंसी फंड को भी आसानी से पूरा कर सकता है।

खर्चों का रिकॉर्ड रखना बचत की पहली सीढ़ी

वित्तीय योजना की शुरुआत हमेशा इस सवाल से होती है कि आपका पैसा आखिर खर्च कहां हो रहा है। अधिकांश लोग यह मानते हैं कि वे बहुत अधिक खर्च नहीं करते, लेकिन जब महीनेभर के बैंक स्टेटमेंट या डिजिटल भुगतान का रिकॉर्ड देखा जाता है तो कई ऐसे खर्च सामने आते हैं, जिनकी वास्तव में कोई जरूरत नहीं होती। बिना इस्तेमाल वाले ओटीटी सब्सक्रिप्शन, बार-बार ऑनलाइन खाना मंगाना, छोटी-छोटी ऑनलाइन शॉपिंग, महंगी कॉफी या बार-बार कैब का उपयोग जैसी आदतें महीने के अंत तक हजारों रुपये का अतिरिक्त खर्च करा देती हैं। यदि व्यक्ति अपने सभी खर्चों को मोबाइल ऐप, एक्सेल शीट या डायरी में दर्ज करना शुरू कर दे तो उसे तुरंत समझ आ जाएगा कि बचत की सबसे अधिक संभावना कहां है।

जरूरत और वैल्यू में फर्क समझना जरूरी

अक्सर लोग आकर्षक ऑफर या फैशन के प्रभाव में ऐसी चीजें खरीद लेते हैं, जिनकी उन्हें वास्तव में आवश्यकता नहीं होती। वित्तीय विशेषज्ञ सलाह देते हैं कि हर खरीदारी से पहले खुद से तीन सवाल पूछें क्या यह वास्तव में जरूरी है? क्या इसका उपयोग लंबे समय तक होगा? और क्या इसे अभी खरीदना आवश्यक है? ऐसी वस्तुओं या अनुभवों पर खर्च करना बेहतर माना जाता है जो लंबे समय तक लाभ दें। उदाहरण के लिए, कोई नई स्किल सीखना, स्वास्थ्य पर खर्च करना, परिवार के साथ यात्रा करना या अच्छी किताबें खरीदना ऐसे निवेश हैं जो लंबे समय तक मूल्य देते हैं। इसके विपरीत केवल दिखावे के लिए की गई खरीदारी कुछ समय बाद महत्व खो देती है।

'फन बजट' बनाएं, बचत भी होगी व खुशी भी

कई लोग बचत करने के उत्साह में अपने सभी मनोरंजन संबंधी खर्च बंद कर देते हैं। शुरुआत में यह आसान लगता है, लेकिन कुछ समय बाद व्यक्ति मानसिक रूप से थक जाता है और फिर अचानक जरूरत से ज्यादा खर्च करने लगता है। इस स्थिति से बचने के लिए विशेषज्ञ हर महीने एक निश्चित राशि केवल मनोरंजन, घूमने-फिरने, फिल्म देखने या दोस्तों के साथ समय बिताने के लिए अलग रखने की सलाह देते हैं। इसे 'फन बजट' कहा जाता है। इससे व्यक्ति बिना किसी अपराधबोध के अपनी पसंद की गतिविधियों का आनंद ले सकता है और उसका कुल बजट भी नहीं बिगड़ता।

लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन बड़ा वित्तीय जाल

वित्तीय दुनिया में एक शब्द काफी लोकप्रिय है। 'लाइफस्टाइल इन्फ्लेशन'। इसका मतलब है कि जैसे-जैसे आय बढ़ती है, वैसे-वैसे व्यक्ति अपने खर्च भी बढ़ा देता है। नई नौकरी मिलने पर महंगा मोबाइल खरीद लेना, वेतन बढ़ते ही लग्जरी कार की ईएमआई शुरू कर देना या हर सप्ताह महंगे रेस्टोरेंट जाना इसी प्रवृत्ति के उदाहरण हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि वेतन बढ़ने पर सबसे पहले बचत और निवेश की राशि बढ़ानी चाहिए। यदि हर वेतन वृद्धि का कम से कम 40 से 50 प्रतिशत हिस्सा सीधे एसआईपी, पीपीएफ, एनपीएस या अन्य निवेश विकल्पों में लगाया जाए तो कुछ वर्षों में बड़ा निवेश कोष तैयार किया जा सकता है।

रोजमर्रा की छोटी आदतों में करें बड़ा बदलाव

बचत के लिए हमेशा बड़े बदलाव की जरूरत नहीं होती। छोटी-छोटी आदतें भी लंबी अवधि में बड़ा असर डालती हैं। उदाहरण के लिए, किसी भी सामान को खरीदने से पहले ऑनलाइन कीमतों की तुलना करना, कैशबैक और डिस्काउंट ऑफर का लाभ उठाना, अनावश्यक गैजेट अपग्रेड से बचना, बिजली और पानी की बचत करना तथा सप्ताह में कुछ दिन बाहर खाने की बजाय घर का भोजन करना जैसी आदतें हर महीने अच्छी रकम बचा सकती हैं। इसी तरह क्रेडिट कार्ड का उपयोग केवल उतना ही करें, जितना समय पर चुका सकें। अनावश्यक ईएमआई से बचना और हर महीने आय का कम से कम 20 से 30 प्रतिशत बचत या निवेश के लिए अलग रखना वित्तीय अनुशासन का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है।

असदपुर से मालाहेड़ा रोड और रेवाड़ी-कोटकासिम सड़क की होगी मरम्मत

शहरी व ग्रामीण क्षेत्रों की सड़कों पर नव निर्माण पर 65 करोड़ होंगे खर्च

माजरा गुरदास से कालाका सांगवाड़ी रोड, जोनियावास एप्रोच रोड का किया जाएगा निर्माण

- तातारपुर से मालाहेड़ा तक, रोजका से असदपुर रोड, बीकानेर से घुड़कावास रोड की जाएगी मरम्मत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। सीएम नायब सैनी के साथ विधायक लक्ष्मण यादव। फोटो : हरिभूमि

प्रदेश सरकार ने रेवाड़ी विधानसभा क्षेत्र में सड़कों के निर्माण एवं मरम्मत कार्यों के लिए करीब 65 करोड़ रुपये की राशि स्वीकृत की है। विधायक लक्ष्मण सिंह यादव ने बताया कि स्वीकृत कार्यों में वर्ष 2025-26 और 2026-27 के दौरान अनेक महत्वपूर्ण सड़क निर्माण एवं विशेष मरम्मत परियोजनाएं शामिल हैं। इनमें रेवाड़ी शहर की प्रमुख सड़कों के साथ-साथ विभिन्न गांवों की एप्रोच रोड का निर्माण और सुदृढ़ीकरण किया जाएगा। विधायक ने विकास कार्यों के लिए मुख्यमंत्री नायब सैनी का आभार जताया है।

इन सड़कों का किया जाएगा निर्माण और सुधार

सरकुलर रोड निर्माण पर बावल चौक से धारूहेड़ा चुंगी तक, धारूहेड़ा चुंगी से अभय सिंह चौक तक, कालूवास की ढाणी से रेलवे फाटक तक, खलियावास एप्रोच रोड, ढाकिया से लोकरी एप्रोच रोड, जांटी एप्रोच रोड, कालाका एप्रोच रोड, मीरपुर एप्रोच रोड, पीएचसी मीरपुर एप्रोच रोड, रामगढ़ भगवानपुर से भगवानपुर तक, माढ़ैया एप्रोच रोड, बालावास अहीर एप्रोच रोड, बालावास बुढ़पुर से लाखनौर तक, नया गांव एप्रोच रोड, घुड़कावास एप्रोच रोड, भूरथल ठेठर से हरिजन बस्ती तक, रेवाड़ी-कोटकासिम रोड से पदैयावास तक, तातारपुर से मालाहेड़ा तक, रोजका से असदपुर रोड, बीकानेर से घुड़कावास रोड, बालावास अहीर से बुढ़पुर रोड, असदपुर से मालाहेड़ा रोड और रेवाड़ी-कोटकासिम सड़क का मरम्मत कार्य शामिल हैं।

भूरथल जाट से नूरपुर घुड़कावास रोड का होगा निर्माण

वही हुड्डा चौक से हरिनगर वाया नईवाली, तीतरपुर से जौतपुरा रोड, माजरा गुरदास से कालाका सांगवाड़ी रोड, जोनियावास एप्रोच रोड, मुंडिया खेड़ा से खिजूरी रोड, श्योराज माजरा से सांगवाड़ी रोड, पीएसआर से खलीलपुरी रोड, भूडला से एनएच-8 तक, मसानी से फदनी रोड, सांगवाड़ी से एनएच-71 तक, कालाका से एनएच-8 तक, रसगण एप्रोच रोड, जांट से दौलताबाद रोड, नया गांव से घुड़कावास तक, गोकलगढ़ से कालूवास रोड, लिसाना से गोकलपुर रेलवे फाटक तक, बीकानेर से नया गांव तक, गिंदोखर से बीकानेर रोड, एप्रोच रोड से खड़गवास तक, राजावास से नूरपुर एप्रोच रोड, शेखपुर शिकारपुर से किशनगढ़ तक, बुढ़पुर से कालूवास की ढाणी तक, भूरथल जाट से नूरपुर घुड़कावास रोड का निर्माण कार्य होगा।

रेवाड़ी। आरआरएन डीएवी स्कूल में पौधरोपण की तैयारी करते विद्यार्थी। फोटो : हरिभूमि

छात्र नायक को सदैव अनुशासन, ईमानदारी व जिम्मेदारी का परिचय देना चाहिए: वैशाली

- गतिविधियों, प्रार्थना सभा, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा सामाजिक अभियानों में निभाएंगे नेतृत्व

हरिभूमि न्यूज ▶▶| कोसली

कोसली के आरआरएन डीएवी पब्लिक स्कूल में भाषण प्रतियोगिता एवं पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। प्राचार्य सुनील कुमार यादव ने शिक्षकों व बच्चों के साथ पौधा रोपित कर पौधारोपण अभियान की शुरूआत की। इस अवसर पर बच्चों ने पौधों की देखभाल करने की शपथ भी ली। पौधारोपण के बाद छात्र नायक की जिम्मेदारियां विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने नायक छात्र को लेकर अपने विचार व्यक्त किए। छात्रा वैशाली ने कहा कि छात्र नायक एवं छात्र नायिका को सदैव अनुशासन, ईमानदारी और जिम्मेदारी का परिचय देना चाहिए। उन्हें अपने व्यवहार से ऐसा उदाहरण प्रस्तुत करना चाहिए कि अन्य विद्यार्थी भी उनसे प्रेरणा लें। छात्र ईशांत ने कहा कि छात्र नायक एवं छात्र नायिका विद्यालय की विभिन्न गतिविधियों, प्रार्थना सभा, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों तथा सामाजिक अभियानों में सक्रिय नेतृत्व निभाएं। नायक को समय की पाबंदी, टीम वर्क और सकारात्मक सोच के माध्यम से विद्यालय का गौरव बढ़ाना चाहिए। छात्रा दीपा ने कहा कि एक सच्चा छात्र नेता वही है, जो सेवा की भावना से कार्य करें। उसे विद्यालय में स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, नैतिक मूल्यों तथा आपसी सम्मान की भावना को बढ़ावा देना चाहिए। छात्र दक्ष ने कहा कि एक अच्छे छात्र नेता को सभी विद्यार्थियों की समस्याओं को धैर्यपूर्वक सुनना चाहिए और उनके समाधान के लिए शिक्षकों तथा विद्यालय प्रशासन के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए। प्राचार्य सुनील कुमार ने कहा कि छात्र नायक को लेकर उनके विचारों की सराहना की।

ड्रॉपआउट बच्चों को पुनः शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने के लिए चलाएं अभियान: उपायुक्त

- निजी विद्यालयों में प्रवेश से संबंधित शिकायतों के समाधान के लिए होगी पारदर्शी व्यवस्था

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। अधिकारियों की बैठक लेते हुए डीसी अभिषेक मीणा। फोटो : हरिभूमि

डीसी अभिषेक मीणा ने कहा कि हरियाणा सरकार शिक्षा के क्षेत्र में गुणवत्ता सुधार तथा विभिन्न योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि विभागीय पोर्टल पर डेटा अपलोड, प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य आवश्यक सूचनाएं समय पर उपलब्ध कराई जाएं। डीसी ने शनिवार को लघु सचिवालय सभागार में शिक्षा विभाग सहित अन्य विभागों के अधिकारियों के साथ बैठक की। इससे पहले हरियाणा सरकार में मुख्य सचिव अनुराग रस्तोगी ने सभी जिलों के डीसी और अन्य अधिकारियों के साथ वीसी के माध्यम से समग्र शिक्षा अभियान, विद्यालयों में चल रहे सिविल कार्यों, व्यावसायिक शिक्षा और कौशल विकास कार्यक्रमों की समीक्षा की।

डीसी मीणा ने कहा कि स्कूल छोड़ चुके बच्चों (ड्रॉपआउट) की पहचान कर उन्हें पुनः विद्यालयों से जोड़ने के लिए विशेष अभियान चलाया जाए। इसके साथ ही निजी विद्यालयों में प्रवेश प्रक्रिया से संबंधित शिकायतों के समाधान के लिए पारदर्शी और जवाबदेह व्यवस्था विकसित की जाए, ताकि अभिभावकों को अनावश्यक कठिनाइयों का सामना न करना पड़े।

पोक्सो एक्ट 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को यौन शोषण उत्पीड़न और अश्लीलता से बचाने के लिए : सीजेएम

- पोक्सो एक्ट के तहत पीड़ित बच्चे की पहचान मीडिया या सार्वजनिक रूप से पहचान करना कानूनी अपराध

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। कार्यशाला में जानकारी देते हुए अतिथि। फोटो : हरिभूमि

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से शनिवार को को जैन स्कूल में पोक्सो एक्ट 2012 को लेकर कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में डा. रेनू सोलखे मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी कम सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की तथा बच्चों को पोक्सो एक्ट की जानकारी दी। सीजेएम ने बताया कि पोक्सो एक्ट 2012 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चों को यौन शोषण, उत्पीड़न और अश्लीलता से बचाने के लिए है। यह लड़के और लड़की दोनों को समान रूप से सुरक्षा प्रदान करता है एवं इस एक्ट के तहत पीड़ित बच्चे की पहचान मीडिया या सार्वजनिक रूप से करना कानूनी अपराध है। पैनल अधिवक्ता निशा सैनी ने बच्चों को उनके कानूनी अधिकार एवं कर्तव्य तथा बच्चों के लिए नालसा की मुफ्त कानूनी सहायता के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से हेल्पलाइन नंबर 01274-220062 चलाया हुआ है, जिस पर आम जन किसी भी प्रकार के कानूनी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इसके अलावा उच्चतम न्यायालय की ओर से आमजन के लिए चलाए गए टोल फ्री नंबर 15100 पर कॉल करके फ्री कानूनी सहायता ली जा सकती है। कार्यशाला में जैन स्कूल के संरक्षक मोहित जैन व प्रिंसिपल विजया गुप्ता उपस्थित थे।

वन विभाग व नप ने चलाया सफाई अभियान

नारनौल। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की चेयरपर्सन एवं जिला व सत्र न्यायाधीश डॉ. रितु वाईके बहल तथा जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव नीलम कुमारी के मार्गदर्शन में पंचायत भवन के समीप स्थित पार्किंग स्थल पर सफाई की। आमजन को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने और सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ बनाए रखने के मुख्य उद्देश्य से अभियान में एक बेहतरीन मिसाल पेश की गई।

वीएलडीए पर हमले व कार्यस्थल के दबाव के विरोध में कर्मचारियों का प्रदर्शन

नारनौल। करनाल जिले में वैक्सीनेशन के दौरान एक वीएलडीए पर हुए जानलेवा हमले तथा सिरसा जिले में एक वीएलडीए की मौत के मामले को लेकर जिले के वीएलडीए ने शनिवार को आकस्मिक बैठक कर मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपा। बैठक की अध्यक्षता जिला प्रधान विक्रम सिंह ने की। बैठक के बाद उप-निदेशक पशुपालन विभाग महेंद्रगढ़ (नारनौल) के माध्यम से मुख्यमंत्री को मांगपत्र भेजा गया। ज्ञापन में कहा कि करनाल जिले में वैक्सीनेशन के बाद एक बछड़े की मृत्यु होने पर पशु मालिक ने वीएलडीए सुरेंद्र सिंह पर जानलेवा हमला कर दिया। हमले में उन्हें गंभीर चोटें आईं, दोनों हाथ टूट गए, पसलियां क्षतिग्रस्त हो गईं तथा सिर पर भी हथियारों से वार किया गया। वर्तमान में वे आईसीयू में उपचाराधीन हैं। कर्मचारियों ने आरोपियों के खिलाफ कड़ी कानूनी कार्रवाई करने की मांग की।

आईजी की स्पेशल टीम ने पकड़ा शराब का जखीरा पिकअप गाड़ी से 177 पेटी अवैध शराब बरामद

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

आईजी साउथ रेंज की स्पेशल टीम ने बावल थाना पुलिस के साथ संयुक्त कार्रवाई करते हुए अवैध शराब से भरी पिकअप गाड़ी पकड़ने में सफलता हासिल की है। गाड़ी से 177 पेटी अवैध शराब बरामद की गई है। आरोपी के खिलाफ बावल पुलिस थाने में केस दर्ज कराने के बाद उसे कोर्ट से 2 दिन के रिमांड पर लिया गया है। आईजी स्पेशल स्टाफ के एएसआई साबिर हुसैन को सूचना मिली थी कि फिदेड़ी निवासी अविनाश बंद बॉडी की पिकअप गाड़ी में अवैध शराब भरकर धारूहेड़ा से बावल की ओर जाएगा। इसके बाद वह बावल से झाबुआ रोड की ओर जाएगा।

सूचना मिलने के बाद आईजी की स्पेशल टीम ने झाबुआ रोड पर बावल पुलिस के साथ नाकेबंदी करते हुए वाहनों की चेकिंग शुरू कर दी। इसी दौरान एक बंद बॉडी की पिकअप गाड़ी को चेक किया, तो उसमें अवैध शराब भरी हुई थी।

वृहद पौधरोपण एवं पौधा दान अभियान चलाया

नारनौल। पर्यावरण संरक्षण एवं हरित भारत के संकल्प को साकार करने की दिशा में आर्यव्रत सेवा न्यास की ओर से एक भव्य पौधा दान एवं पौधरोपण अभियान का आयोजन किया गया। इस अभियान के अंतर्गत न्यास द्वारा हजारों पौधे स्थानीय नागरिकों को निःशुल्क वितरित किए गए। बड़ी संख्या में लोगों ने उत्साहपूर्वक पौधों को अपनाकर उनकी देखभाल एवं संरक्षण का संकल्प लिया। इस अवसर पर आर्यव्रत सेवा न्यास के संस्थापक विनीत पिलानिया के बेटे मृत्युंजय सिंह पिलानिया ने स्वयं नागरिकों को पौधे भेंट किए तथा सभी से प्रत्येक पौधे को एक परिवार के सदस्य की तरह संरक्षित करने का आह्वान किया। इस मौके पर प्रद्युम चहल, विपिन पिलानिया, सचिन बापडोली, कुलदीप झासवा, सुनील चौधरी, प्रवेश कौशिक, विकास सैनी, दीपेश यादव, नागेंद्र, अनिल यादव, राकेश यादव, पुरुषोत्तम तथा प्रदीप गुर्जर सहित अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।उन्होंने कहा कि पर्यावरण संरक्षण केवल सरकार की नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है।

ज्ञानदीप में गणित क्विज प्रतियोगिता

महेंद्रगढ़। बीआर ज्ञानदीप स्कूल सुरजनवास में कक्षा चौथी एवं पांचवीं के विद्यार्थियों के लिए गणित क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता का उद्देश्य विद्यार्थियों में गणित के प्रति रुचि विकसित करना, तार्किक क्षमता बढ़ाना तथा स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को प्रोत्साहित करना था। विद्यार्थियों ने पूरे उत्साह, आत्मविश्वास और टीम भावना के साथ विभिन्न रोचक एवं ज्ञानवर्धक राउंड में भाग लिया। प्रतियोगिता में टीम डी ने उत्कृष्ट प्रदर्शन कर प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस टीम के सदस्य विरोचन, वीरेन, अंश एवं सार्थक रहे। वहीं टीम ए ने सराहनीय प्रदर्शन कर द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस टीम में भाविका, राव्या, रुहान एवं भाविन शामिल रहे। इस प्रतियोगिता का सफल संचालन कल्पना शर्मा के मार्गदर्शन में किया गया। प्रतियोगिता को सफल बनाने में ईशू, मंजू एवं ज्योति का विशेष सहयोग रहा, जिनके समर्पण और टीमवर्क से कार्यक्रम अत्यंत सफल रहा।

आरपीएस स्कूल में 600 पौधे किए वितरित

रेवाड़ी। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से शनिवार को आरपीएस पब्लिक स्कूल में पौधारोपण अभियान के तहत रोटरी क्लब के सहयोग से करीब 600 पौधे वितरित किए गए। मुख्यातिथि सीजेएम डा. रेनु सोलखे ने विद्यार्थियों को पर्यावरण संरक्षण के लिए अधिक से अधिक पौधारोपण करने के लिए प्रोत्साहित किया। इस मौके पर स्कूल में अनेक पौधे रोपित किए गए। इस अवसर पर स्कूल प्राचार्य, अध्यापक और विद्यार्थी उपस्थित थे।

नीट में आरपीएस के 140 विद्यार्थियों ने 500 से अधिक अंक किए हासिल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

एनटीए द्वारा घोषित नीट परीक्षा परिणाम में आरपीएस समूह की काव्या ने 720 में से 680, लता व आर्यन ने 672, प्रिया ने 667, आर्यन ने 665, यश ने 660, अमन ने 658 व अक्षत ने 651 अंक प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। वहीं आरपीएस के यश ने नीट परीक्षा में ऑल इंडिया कैटेगरी रैंक 24, अमन ने 29, अक्षत ने 37, आर्यन ने 48, काव्या ने 83, आर्यन ने 102, लता ने 139 व प्रिया ने 182, राहुल ने 206, आर्यन ने 273, याशिका ने 280, दिव्यांशु ने 398, मयंक ने 419, चिराग ने 602, निशा ने 643, देव ने 646, आयुष ने 842, सार्थक ने 864, विवेक ने 922, दीपिका ने 974, शिखर ने 980वीं रैंक प्राप्त कर आरपीएस के साथ-साथ, पूरे हरियाणा प्रदेश का नाम पूरे देश में रोशन किया है। बच्चों की इस उपलब्धि पर आरपीएस विद्यालय ही नहीं बच्चों के घरों, शहरों व क्षेत्रों में भी जश्न का माहौल रहा।

खंड स्तरीय कल्चरल फेस्ट का रंगारंग समापन, विजेताओं को किया सम्मानित

महेंद्रगढ़। जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित खंड स्तरीय कल्चरल फेस्ट का सांस्कृतिक रंगों के बीच सफलतापूर्वक समापन हुआ। समापन अवसर पर विभिन्न सांस्कृतिक प्रतियोगिता के विजेता विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया तथा उन्हें जिला स्तरीय प्रतियोगिता के लिए शुभकामना दी गईं। कल्चरल फेस्ट में महेंद्रगढ़ खंड के सरकारी विद्यालयों के लगभग 210 विद्यार्थियों ने लोक संस्कृति, संगीत, नृत्य एवं नाट्य कला के माध्यम से अपनी प्रतिभा का शानदार प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के दौरान विद्यार्थियों का आत्मविश्वास, अनुशासन एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति समर्पण देखने योग्य रहा। खंड शिक्षा अधिकारी जगमाल सिंह ने कहा कि इस प्रकार के सांस्कृतिक आयोजन विद्यार्थियों में रचनात्मक सोच, नेतृत्व क्षमता, आत्मविश्वास तथा टीम भावना का विकास करते हैं। इस अवसर पर खंड शिक्षा अधिकारी जगमाल सिंह ने सभी प्रतिभागियों एवं विजेता विद्यार्थियों को शुभकामना देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। कार्यक्रम में नरेश गोयल, ईश्वर चंद्र, दीपक शर्मा, पूजा शर्मा, अनीता यादव, बीना यादव, मुकेश कुमार, हरीश रोहिल्ला, सूर्यकांत यादव, संजय कुमार, सतन सिंह, शालू शर्मा, ज्योति यादव, अरुण कुमार सहित विभिन्न विद्यालय के मुख्याध्यापक, प्रधानाचार्य, वरिष्ठ प्रवक्ता, शिक्षक एवं शिक्षा विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रदर्शन नारनौल के ऐतिहासिक आजाद चौक पर 13 घंटे का सांकेतिक उपवास, हस्ताक्षर अभियान चलाकर जताया समर्थन

जंतर-मंतर से वांगचुक को उठाना संसद सत्र से पहले रचा षड्यंत्र : खेड़ा

- आजाद चौक पर शहर के लोगों ने 13 घंटे के लिए शुरू किया सांकेतिक धरना

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

जंतर-मंतर से सामाजिक कार्यकर्ता सोनम वांगचुक को हटाना संसद के मानसून सत्र को देखते हुए सरकार द्वारा रचा गया षड्यंत्र है। यह आरोप सामाजिक कार्यकर्ता एवं धरना के संयोजक गिरीश खेड़ा ने शनिवार को शहर के ऐतिहासिक आजाद चौक पर आयोजित अनशन एवं सांकेतिक धरने के दौरान लगाया। उन्होंने कहा कि सरकार चाहती तो अपने किसी प्रतिनिधि को भेजकर बातचीत के माध्यम से धरना और आमरण अनशन समाप्त करवा सकती थी। सरकार यह आश्वासन भी दे सकती थी कि यदि भविष्य में नीट पेपर लीक जैसी घटना दोबारा होती है तो शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से तत्काल इस्तीफा लिया जाएगा, लेकिन ऐसा करने के बजाय पुलिस बल का प्रयोग कर सोनम वांगचुक और उनके साथियों को अनशन स्थल से उठा लिया गया।

बता दें कि आजाद चौक पर सोनम वांगचुक के आमरण अनशन, त्याग और देशभक्ति के समर्थन में शहर के जागरूक नागरिकों ने सवेरे 13 घंटे का सांकेतिक धरना शुरू किया। धरने के दौरान संयोजक गिरीश खेड़ा और सेवानिवृत्त बीईओ राम अवतार डाडैया ने उपवास रखा। साथ ही आमजन से समर्थन जुटाने के लिए हस्ताक्षर अभियान भी चलाया गया, जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने हस्ताक्षर कर अपना समर्थन दर्ज कराया और सरकार के खिलाफ विरोध जताया।

नारनौल। आजाद चौक में वांगचुक के समर्थन में अनशन एवं धरने पर बैठे कार्यकर्ता।

ये रहे मौजूद

संजय सैनी, रिंकू सैनी, विवेक भटनागर, एडवोकेट वीरभान श्योराण, मेनपाल यादव, पूर्व सैनिक करण सिंह, रामदेव, गोविंद सोनी, जोगिंद्र सिंह खन्ना, मनोज डहीनवाल, आत्माराम सैनी, हवा सिंह, विक्रम सिंह व जितेंद्र सहित अनेक नागरिक उपस्थित रहे।

संवाद का रास्ता अपनाने के बजाय दमनात्मक कार्रवाई करना उचित नहीं

गिरीश खेड़ा ने कहा कि सरकार की कार्रवाई से स्पष्ट हो गया है कि वह 20 जुलाई को प्रस्तावित संसद मार्च को किसी भी कीमत पर सफल नहीं होने देना चाहती। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र में संवाद का रास्ता अपनाने के बजाय दमनात्मक कार्रवाई करना उचित नहीं है। उन्होंने पेपर लीक के मुद्दे पर भी सरकार को घेरते हुए कहा कि यदि किसी स्कूल बस चालक की लापरवाही से दुर्घटना होती है तो चालक के साथ-साथ स्कूल प्रबंधन तक को जिम्मेदार ठहराया जाता है। इस दौरान डॉ. राजवती यादव, कामरेड छाजूराम रावत, धीरज शर्मा, श्याम सुंदर सोनी, एडवोकेट मनजीत सिंह, डॉ. व्रतपाल सिंह व जयसिंह सैनी ने भी संबोधित किया।

रेवाड़ी। वार्डो में सप्लाई हो रहा गंदा पानी।

दुर्गंध युक्त पानी मिलने से लोगों में पनपा भारी रोष

शहर के छह वार्डों में दूषित पेयजल सप्लाई बनी परेशानी

जेएलएन में पानी नहीं आने से सप्लाई में शुरू कर दी जाती है कटौती

1 सप्लाई में गंदा पानी आने से खरीदने पड़ रहे कैंपर, बीमारियों का भी बढ़ा खतरा

2 कई बार शिकायत देने के बाद में जनस्वास्थ्य विभाग नहीं कर रहा कोई कार्रवाई

3 शहर के वार्ड नंबर 24,25, 26,27 और 28 में दुषित सप्लाई बनी परेशानी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

सिटी पल्स

गर्मी के मौसम में जहां उपभोक्ताओं को पर्याप्त पानी नहीं मिल रहा है। जेएलएन नहर में पानी आना बंद होने के साथ ही सप्लाई में कटौती शुरू कर दी जाती है। वहीं शहर के कई वार्डों में गंदा व बदबूदार पानी भी सप्लाई हो रहा है। दुर्गंध युक्त पानी पीने योग्य तो दूर, अन्य घरेलू कार्यों के उपयोग के लिए भी उपयुक्त नहीं है। जन स्वास्थ्य विभाग की ओर से शहर के वार्ड नंबर-24 कुतुबपुर व खड्डा बस्ती, वार्ड नंबर-25 सुभाष बस्ती व विकास नगर, वार्ड नंबर-26 शिव कॉलोनी, वार्ड नंबर-27 अजय नगर, वार्ड नंबर-28 रामसिंहपुरा, इन्द्रा कॉलोनी व दुर्गा कॉलोनी और वार्ड नंबर-29 यादव नगर में पिछले कई दिनों से पेयजल सप्लाई का गंदा और बदबूदार पानी आने से हजारों लोग परेशान हैं। दूषित पेयजल की सप्लाई से क्षेत्र में जलजनित बीमारियों का खतरा भी बढ़ गया है। मजबूरी में कई परिवारों को पीने के लिए कैंपर खरीदने पड़ रहे हैं, जिससे आर्थिक बोझ भी बढ़ रहा है। वार्डवासियों का कहना है कि कई बार शिकायत देने के बाद भी जनस्वास्थ्य विभाग की ओर से कोई स्थाई समाधान नहीं किया जा रहा है।

पेयजल आपूर्ति में सुधार की जरुरत

नलों में आने वाला पेयजल सप्लाई का पानी इतना बदबूदार है कि उसे पीना तो दूर, उसका अन्य घरेलू इस्तेमाल तक नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि विभाग को तत्काल पेयजल आपूर्ति व्यवस्था में सुधार करना चाहिए।

-राज भटनागर, गृहणी।

पानी की गुणवत्ता की जांच करें

पेयजल की गुणवत्ता की तत्काल जांच कराई जाए और लोगों को स्वच्छ एवं सुरक्षित पेयजल उपलब्ध कराया जाए। अधिकारियों को चाहिए कि समय-समय पर पानी के सैंपल लेकर गुणवत्ता की जांच करें।

-पूजा कुमारी, गृहणी।

लोगों में भारी नाराजगी

वार्ड में कई दिनों से लगातार गंदे पानी की सप्लाई हो रही है। शिकायत करने के बावजूद समस्या जस की तस बनी हुई है, जिससे लोगों में भारी नाराजगी है।

-रेनू सैनी, गृहणी।

बीमारियां फैलने का खतरा

दूषित पानी के कारण सबसे अधिक चिंता छोटे बच्चों और बुजुर्गों के स्वास्थ्य को लेकर है। यदि समय रहते समाधान नहीं किया गया तो क्षेत्र में बीमारियां फैलने का खतरा बढ़ सकता है।

-सपना भार्गव, गृहणी।

बाजार से पानी खरीदने को मजबूर

बदबूदार और दूषित पानी की सप्लाई से लोगों का दैनिक जीवन प्रभावित हो गया है। पीने के लिए स्वच्छ पानी नहीं मिलने के कारण कई परिवार बाजार से पानी खरीदने को मजबूर हैं। प्रशासन जल्द से जल्द समस्या का स्थाई समाधान कर स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराए।

-आरती, गृहणी।

समस्या का करा दिया गया समाधानः जेई

शहर के छह वार्डो से गंदे पानी की शिकायत मिल रही थी, जिसको समाधान करा दिया गया है। प्लांट में कुछ कमी के कारण गंदा पानी सप्लाई में जा रहा था। लोगों के स्वास्थ्य को ध्यान में रखते हुए समस्या का समाधान कर दिया गया है। अगर अभी भी पानी साफ नहीं है तो इसका जल्द समाधान कर दिया जाएगा।

-सुनील कुमार, जेई, जनस्वास्थ्य विभाग।

न्यूज डायरी

हंसिका ने नीट परीक्षा उत्तीर्ण कर बढ़ाया ह्युमेनिटी विद्यालय और क्षेत्र का गौरव

कोसली। ह्युमेनिटी स्कूल भैरामपुर भड़गी की होनहार छात्रा हंसिका ने प्रतियोगी परीक्षा नीट में शानदार प्रदर्शन करते हुए ऑल इंडिया स्तर पर 3119 तथा कैटेगिरी में 1171 रैंक प्राप्त कर विद्यालय, अपने परिवार एवं पूरे क्षेत्र का नाम रोशन किया है। इस उल्लेखनीय उपलब्धि पर विद्यालय प्रबंधन, प्रधानाचार्या, शिक्षकों एवं विद्यार्थियों ने छात्रा को बधाई दी। छात्रा की मां नीलम व पिता जितेन्द्र ने इस सफलता का श्रेय बेटी की मेहनत, अनुशासन, शिक्षकों के मार्गदर्शन और परिवार के सहयोग को दिया। विद्यालय की प्रधानाचार्या ने कहा कि हंसिका की सफलता अन्य विद्यार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत है और यह सिद्ध करती है कि दृढ़ संकल्प, निरंतर परिश्रम एवं सही मार्गदर्शन से हर लक्ष्य प्राप्त किया जा सकता है।

गंगायचा जाट की तमन्ना ने नीट में हासिल की ऑल इंडिया स्तर पर 22467वीं रैंक

रेवाड़ी। गांव गंगायचा जाट निवासी तमन्ना ने नीट में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए ऑल इंडिया स्तर पर 22467 तथा कैटेगरी रैंक 10734 हासिल की है। तमन्ना ने अपनी उपलब्धि का श्रेय परिवार व गुरुजनों को दिया है। पिता अजय सिंह व मां रजनी के कहा कि ये उपलब्धि तमन्ना की कड़ी मेहनत, अनुशासन और समर्पण काा परिणाम है। तमन्ना ने कक्षा 12वीं में 86 प्रतिशत व दसवीं में 94 प्रतिशत अंक प्राप्त किए थे। गांव के सरपंच, सामाजिक संगठनों व शिक्षकों ने तमन्ना को इस उपलब्धि पर बधाई दी है।

गांव नाहड़ के भूपेन्द्र ने नीट यूजी परीक्षा में हासिल की 3092 वीं कैटेगरी रैंक

कोसली। गांव नाहड़ निवासी भूपेन्द्र ने नीट यूजी परीक्षा उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए ऑल इंडिया स्तर पर 7234 तथा कैटेगरी रैंक 3092 हासिल की है। भूपेन्द्र ने परीक्षा में 720 में से 610 अंक प्राप्त कर परिवार, गांव व क्षेत्र का नाम रोशन किया है। छात्र के पिता संतलाल प्राइवेट स्कूल में कार्यरत है और मां गृहणी है। भूपेन्द्र ने दसवीं 89 प्रतिशत अंकों के साथ जवाहर नवोदय विद्यालय और बारहवीं 92 प्रतिशत अंकों के साथ केंद्रीय विद्यालय भांकली से पास की थी। भपेन्द्र ने अपनी सफलता का श्रेय दादा-दादी, माता-पिता, चाचा-चाची तथा गुरुजनों के मार्गदर्शन को दिया है।

नीट परीक्षा में राठ इंटरनेशनल स्कूल के छात्रों ने किया शानदार प्रदर्शन

रेवाड़ी। राठ इंटरनेशनल ग्रुप ऑफ स्कूल के छात्रों ने नीट के परिणाम में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। छात्र लक्ष्य व शीतल ने बताया 720 में से 650 अंक प्राप्त कर राज्य एवं क्षेत्र को गौरवान्वित किया है। विद्यालय से 25 विद्यार्थियों ने नीट की परीक्षा उत्तीर्ण की। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी की ओर से घोषित नीट के परिणाम में लकिता 622, हर्ष पांडेय 620, कुमकुम 620, महक 575, प्रिया कुमारी 568, पलक 575, ईशा 585, निवेता 562, प्रिया 552, मनीष 588, अभिषेक 492, उत्कृष्ट 478, निधि 590 व दीक्षांत ने 587 अंक प्राप्त किए। राठ ग्रुप के चेयरमैन बलवान सिंह यादव, सेक्रेटरी नितेश यादव, डायरेक्टर शिवानी यादव व अकडेमिक डायरेक्टर डा. रविन्द्र सिंह तंवर ने विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षकों को सम्मानित किया। चेयरमैन ने बताया कि विद्यालय में आईआईटी-जेईई, नीट, एनडीए, क्लैट व सीए फाउंडेशन सहित विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए नियमित टेस्ट और उच्च गुणवत्ता का अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जाती है। इस अवसर पर अकेडमिक डीन प्रियंका यादव व प्रधानाचार्य पवन यादव सहित समस्त स्टाफ ने विद्यार्थियों को बधाई दी।

डूंगरवास की बेटी नितिशा ने नेट यूजी परीक्षा में हासिल किए 578 अंक

रेवाड़ी। जिले के डूंगरवास गांव की होनहार छात्रा नितिशा ने नेट यूजी परीक्षा में शानदार प्रदर्शन करते हुए 720 में से 587 अंक प्राप्त किए हैं। इस उपलब्धि से उन्होंने न केवल अपने परिवार, बल्कि पूरे क्षेत्र और विद्यालय का नाम रोशन किया है। प्रदीप पंच ने बताया कि नितिशा की उपलब्धि से आसपास के गांवों में खुशी का माहौल है। नितिशा ने कड़ी मेहनत, नियमित अध्ययन और अनुशासित तैयारी के दम पर यह सफलता हासिल की है। छात्रा ने अपनी सफलता का श्रेय अपने माता पिता, शिक्षकों और परिवार के सहयोग को दिया है। उनके पिता हरीश चंद्र ने बताया कि नितिशा की उपलब्धि यह साबित करती हैं कि सफलता बड़े शहरों तक सीमित नहीं है। सही दिशा में तैयारी हो तो ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थी भी राष्ट्रीय स्तर की परीक्षाओं में शानदार प्रदर्शन कर सकते हैं। उनकी सफलता आने वाले वर्षों में अनेक छात्रों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत बनेगी। भूदेव, सुमेर, देशराज, निर्मल व महेश सहित अनेक लोगों ने नितिशा को बधाई दी है।

कृषि यंत्रों पर अनुदान के लिए ऑनलाइन ड्रा से लाभार्थियों का चयन 21 को

रेवाड़ी। सब-मिशन ऑन एग्रीकल्चर मैकेनाईजेशन स्कीम के तहत कृषि यंत्रों पर अनुदान के लिए डीसी अभिषेक मीणा की अध्यक्षता में 21 जुलाई को सुबह 11 बजे ऑनलाइन ड्रा के माध्यम से लाभार्थी किसानों का चयन किया जाएगा। कृषि विभाग के इंजीनियर दिनेश शर्मा ने बताया कि राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत संचालित समैम स्कीम के तहत कृषि यंत्रों पर अनुदान उपलब्ध कराने के लिए गत 16 फरवरी तक विभागीय पोर्टल एग्रीहरियाणा.जीओवी.इन पर ऑनलाइन आवेदन मांगे गए थे, जिसमें 25 प्रकार के कृषि यंत्रों के लिए 1636 आवेदन प्राप्त हुए थे। योजना के तहत विभाग की ओर से जिले में 359 रोटावेटर और 109 लेजर लैण्ड लेवलर पर अनुदान देने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। विभागीय पोर्टल पर अंतिम तिथि तक रोटावेटर के लिए 736 और लेजर लैण्ड लेवलर के लिए 216 सफल आवेदन प्राप्त हुए है। निर्धारित लक्ष्यों से अधिक आवेदन होने के कारण अब 21 जुलाई को लघु सचिवालय में जिला स्तरीय कार्यकारिणी कमेटी की ओर से लाभार्थियों का चयन ऑनलाइन ड्रा के माध्यम से किया जाएगा। चयनित किसानों को कृषि यंत्रों पर 40 से 50 प्रतिशत तक अनुदान उपलब्ध कराया जाएगा।

560 ग्राम नशीला पदार्थ गांजा के साथ सीआईए टीम ने एक आरोपी किया काबू

रेवाड़ी। सीआईए ने अवैध नशीला पदार्थ गांजा के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से 560 ग्राम नशीला पदार्थ गांजा बरामद किया है। उसके खिलाफ रामपुरा पुलिस थाने में एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज कराया गया है। शुक्रवार की रात सीआईए को सूचना मिली थी कि नवीन उर्फ डब्बू गांव रामपुरा नशीला पदार्थ गांजा बेचने का काम करता है। वह भाड़ावास रोड से रामपुरा रेलवे फाटक होते हुए पैदल-पैदल गांव रामपुरा की तरफ जा रहा है। उसके पास नशीला पदार्थ गांजा है। को सच मानकर तुरन्त रेडिग पार्टी तैयार करके बताए हुए स्थान पर पहुंच कर आरोपी को काबू करके नाम पता पूछा तो उसने अपना नाम नवीन उर्फ डब्बू गांव रामपुरा बताया। ड्यूटी मजिस्ट्रेट को साथ लेकर आरोपी की तलाशी ली गई तो आरोपी के कब्जे से 560 ग्राम अवैध नशीला पदार्थ गांजा बरामद हुआ। पुलिस ने आरोपी को मौके पर ही काबू करने के बाद उसे रामपुरा पुलिस के हवाले कर दिया गया। पुलिस ने केस दर्ज करने के बाद आरोपी से पूछताछ शुरू कर दी। बाद में उसे कोर्ट में पेश करते हुए जेल भेज दिया गया।

एडवोकेट सत्येंद्र झाबुआ को मिली इनसो में वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष की जिम्मेदारी

रेवाड़ी। जननायक जनता पार्टी की छात्र इकाई इनसो ने संगठन का पुनर्गठन करते हुए कई महत्वपूर्ण नियुक्तियों की घोषणा की है। संगठन की ओर से जारी सूची के अनुसार जिले से एडवोकेट सत्येंद्र झाबुआ को वरिष्ठ प्रदेश उपाध्यक्ष, नरेंद्र लांबा को प्रदेश उपाध्यक्ष, आजाद पटेल को जिला अध्यक्ष तथा चंद्रकांत शर्मा को प्रदेश प्रवक्ता नियुक्त किया गया है। नवनियुक्त पदाधिकारियों ने जेजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. अजय सिंह चौटाला, पूर्व उपमुख्यमंत्री दुष्यंत चौटाला, युवा नेता दिग्विजय चौटाला तथा इनसो प्रदेश अध्यक्ष दीपक मलिक सहित पार्टी एवं संगठन के शीर्ष नेतृत्व का आभार व्यक्त किया है। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में प्रदेश के प्रत्येक कॉलेज, विश्वविद्यालय एवं शिक्षण संस्थान में इनसो के संगठन को मजबूत किया जाएगा।

गांव नठेडा में स्व. सूबेदार मंगतूराम की पुण्यतिथि पर 251 पौधे लगाकर दी श्रद्धांजलि

कोसली। गांव नठेड़ा के पूर्व सरपंच स्व. सूबेदार मंगतूराम की पुण्यतिथि पर उनके पुत्र कैप्टन जोगिंदर सिंह और हवलदार सुरेंद्र कुमार ने 251 पौधे लगाकर श्रद्धांजलि अर्पित की। गांव के बलखंडी आश्रम और शमशान घाट परिसर में विभिन्न प्रजातियों के पौधे रापित किए गए। उन्होंने बताया कि उनके पिता प्रकृति संरक्षण और समाज सेवा के प्रति समर्पित रहे। उन्होंने पौधो की देखभाल करने का भी संकल्प लिया। ग्रामीणों ने इस पहल की सराहना करते हुए इसे सच्ची श्रद्धांजलि बताया। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन समाज में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के साथ-साथ नई पीढ़ी को भी प्रेरित करते हैं।

चैतन्या टेक्नो स्कूल में हरितोदय उत्सव की धूम, पर्यावरण संरक्षण का दिया संदेश

रेवाड़ी। सनसिटी स्थित श्री चैतन्या टेक्नो स्कूल में शनिवार को हरितोदय उत्सव हर्षोल्लास एवं उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी की भावना विकसित करना रहा। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि राव गजराज सिंह यादव तथा सुनील मुसेपुरिया सेवानिवृत एसडीओ और प्राचार्या हेमा शैलजा ने संयुक्त रूप से पौधारोपण करके किया। छात्रों ने हरितोदय विषय पर भाषण प्रस्तुत कर पेड़ों के महत्व, जलवायु संरक्षण और स्वच्छ पर्यावरण की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किए। प्राचार्या ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने जीवन में कम से कम एक पौधा अवश्य लगाना चाहिए।

जिला लोक अदालत में चेक बाउंस के 34 लंबित मामलों का हुआ निपटारा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण सचिव व सीजेएम डा. रेनू सोलखे की देखरेख में शनिवार को रेवाड़ी, बावल तथा कोसली कोर्ट में चेक बाउंस के मामलों के निपटारे के लिए स्पेशल लोक अदालत का आयोजन किया गया। आकाश सरोहा सिविल जज जूनियर डिवीजन रेवाड़ी, आलोक आनंद अध्यक्ष सब डिविजनल लीगल सर्विस कमेटी बावल, प्रदीप कुमार सिविल जज जूनियर डिवीजन बावल, अशोक कुमार अध्यक्ष सब डिविजनल लीगल सर्विस कमेटी कोसली तथा निशा सिविल जज जूनियर डिवीजन कोसली की कोर्ट में आपसी समझौते के आधार पर 34 केसों को सुलझाया गया। सीजेएम डा. रेनू सोलखे ने बताया कि लोक अदालत में दो केस ऐसे हैं, जो करीब 7 से 8 साल पुराने थे, जिनका निपटारा किया गया। उन्होंने कहा कि लोक अदालत में फैसला होने पर समय और धन दोनों की ही बचत होती है तथा जल्दी न्याय मिलता है तथा दोनों पार्टियों के बीच में भाईचारा बढ़ता है। लोक अदालत का फैसला दोनों पक्षों को मान्य होता है, इसकी कोई अपील नहीं हो सकती।

हवन-यज्ञ से वातावरण शुद्ध होने के साथ सकारात्मक ऊर्जा का होता संचार: सुखदेव

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

दी गवर्नमेंट एम्प्लॉइज को-ऑपरेटिव ग्रुप हाउसिंग सोसायटी सेक्टर-3 में चल रहे 15 दिवसीय योग शिविर का शनिवार को हवन के साथ समापन हो गया। सरोज आर्या जिला महिला प्रभारी पतंजलि योग समिति के नेतृत्व में शिविर सम्पन्न हुआ। समापन समारोह में नमिता यादव व कर्मबीर यादव ने यजमान के रूप में हवन में आहुति डालकर सभी के सुख, समृद्धि, उत्तम स्वास्थ्य एवं विश्व कल्याण की कामना की। सुखदेव आर्य तहसील यज्ञ प्रभारी ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ हवन सम्पन्न कराया। उन्होंने कहा कि हवन-यज्ञ से वातावरण शुद्ध होता है, सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है तथा व्यक्ति के जीवन में संस्कार, संयम और सद्भाव की भावना विकसित होती है। इस अवसर पर राजेश बाई तहसील प्रभारी कोसली ने साधकों को योगासन, सूक्ष्म व्यायाम एवं प्राणायाम का अभ्यास कराया।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
रेवाड़ी कार्यालय : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, सेक्टर-1 वाला कच्चा रास्ता, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी सम्पर्क करें: 8053076211, 8295738500, 8291554800

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।
हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 1500/- रु. 2000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
रेवाड़ी : दुकान नंबर 67, दुर्गा मार्केट, नजदीक महाराणा प्रताप चौक, बावल रोड, रेवाड़ी फोन : 9653537253, 9671434260

अपील सेक्टर 18 के राजकीय कन्या महाविद्यालय में हुआ पौधरोपण कार्यक्रम

बढ़ते प्रदूषण को देखते हुए पौधरोपण समय की सबसे बड़ी आवश्यकता : डॉ. ज्योति

- यदि हम प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाएंगे, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ वातावरण नहीं मिलेगा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| रेवाड़ी

रेवाड़ी। गर्ल्स कॉलेज में पौधारोपण करते हुए शिक्षक। फोटो : हरिभूमि

सेक्टर-18 स्थित प्रथम महिला शिक्षिका माता सावित्रीबाई फुले राजकीय कन्या महाविद्यालय में शनिवार को पौधारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। पौधारोपण अभियान का आयोजन हरित वसुंधरा आधार समिति नारनौल तथा महाविद्यालय की सीएसआर कमेटी के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ कंपनी के सीईओ क्विंगली कोंग तथा प्राचार्या डा. ज्योति यादव ने पौधारोपण करके किया। इस अवसर पर डा. ज्योति यादव व सीईओ ने कहा कि बढ़ते प्रदूषण और घटते हरित क्षेत्र को देखते हुए पौधारोपण आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता बन चुका है। उन्होंने कहा कि यदि हम आज प्रकृति के प्रति अपनी जिम्मेदारी नहीं निभाएंगे, तो आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराना कठिन हो जाएगा। इसलिए प्रत्येक नागरिक को पौधे लगाने के साथ-साथ उनके संरक्षण का भी संकल्प लेना चाहिए। सीएसआर कमेटी की संयोजिका डा. सुनीता ने बताया कि अभियान के दौरान कॉलेज परिसर में लगभग 101 छायादार एवं कलमी फलदार पौधे रोपित किए गए। समिति के सदस्य मोहन कुमार ने बताया कि हरित वसुंधरा आधार समिति पिछले 8 वर्षों से पौधारोपण, पर्यावरण संरक्षण एवं सिंगल यूज प्लास्टिक मुक्त अभियान के लिए निरंतर कार्य कर रही है। इस अवधि में समिति की ओर से लगभग 8000 पौधे लगाए जा चुके हैं तथा लोगों को सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग से दूर रहने के लिए प्रेरित करने के लिए लगभग 7000 कैनवास बैग निःशुल्क वितरित किए जा चुके हैं। इस अवसर पर समिति के सदस्यों के अलावा डा. स्वाति, डा. रजनी, राजकुमार व संदीप कुमार सहित अनेक छात्राएं मौजूद थी।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
रोहतक,रविवार 19 जुलाई 2026

एक समय तक रोजमर्रा की आपा-धापी, दुख और तनाव को दूर करने के लिए लाफ्टर क्लब्स को कारगर माना जाता था। लेकिन हाल के वर्षों में दुख-अवसाद से राहत दिलाने में क्रायिंग क्लब को ज्यादा कारगर माना जाने लगा है। इसीलिए विदेशों में ही नहीं अपने देश में भी इसका ट्रेंड बढ़ रहा है। ये क्रायिंग क्लब कैसे दुखों से राहत दिलाते हैं, यहां बता रहे हैं विस्तार से।

क्रायिंग क्लबों का बढ़ता ट्रेंड
मिलकर रोने से-दुःख हो जाए कम

{ कवर स्टोरी / शाहिद ए. चौधरी }

एक दिन सुबह चहलकदमी करने के दौरान मैंने पार्क के एक कोने में कुछ बुजुर्गों को एक सुर में जोर-जोर से हंसते हुए देखा। अपने-अपने दुःखों को दूर करने, डिप्रेशन से बचे रहने और अपने स्वास्थ्य को बेहतर बनाने का उनका यह तरीका है। बीते कई वर्षों से दुनिया भर में हंसी को सबसे अच्छी दवा मानकर उसे अपनाने का ट्रेंड काफी पॉपुलर हो चुका है। यह देखकर अच्छा लगा। लेकिन संयोग रहा कि जब पार्क से घर लौटा तो दुःखद समाचार मिला कि पड़ोस में रहने वाले एक व्यक्ति की दिल का दौरा पड़ने से डेथ हो गई। मैं शोक व्यक्त करने के लिए उनके घर पहुंचा तो देखा कि गुमसुम बैठी मृतक की पत्नी को अनेक महिलाएं रुलाने का प्रयास कर रही हैं और उनमें से एक को मैंने यह कहते हुए सुना, 'अरे, इन्हें रुला दो, कुछ तो गम गलत होगा, वर्ना सदमे की वजह से डिप्रेशन में चली जाएंगी।' इन दोनों घटनाओं से मैं इस नतीजे पर पहुंचा कि मनुष्य के लिए हंसने और रोने दोनों का बहुत अधिक महत्व है। वैसे भी कुदरत ने ये दोनों गुण इंसानों को ही दिए हैं। चोट लगने पर जानवर चिल्लाते अवश्य हैं, लेकिन इंसानों की तरह रोते नहीं हैं।

रोने के लिए बन रहे क्लब

आमतौर पर रोने को कमजोरी की निशानी मान लिया जाता है। शायद तभी सुदर्शन फाकिर ने अपने एक शेर में कहा है, 'आप कहते थे कि रोने से न बदलेंगे नसीब/उम्र भर आपकी इस बात ने रोने न दिया।' यह कहा भी भले ही जाता हो कि मर्द को दर्द नहीं होता या मर्द रोते नहीं हैं। लेकिन आज दुनिया भर के डॉक्टर्स इस बात को स्वीकार करते हैं कि रोने से मन हल्का होता है और कुछ लोगों के साथ मिलकर रोने से दुःख से राहत महसूस होती है। इसलिए देश के कई शहरों में क्रायिंग क्लब खुल रहे हैं। देश-समाज का यह नवीनतम सामूहिक संस्कार है, जिसमें हंसी की जगह आंसुओं ने ले ली है। इनमें व्यक्ति उस समय तक रो सकता है, जब तक उसके दिल का बोझ हल्का न हो जाए और वह जिंदगी की नई शुरुआत करने के लिए तैयार न हो जाए।

काफी लोग हो रहे शामिल

क्रायिंग क्लब, दशकों पुराने लाफ्टर क्लबों का जवाब-सा प्रतीत हो रहे हैं। मुंबई, दिल्ली, बैंग्लुरु और हैदराबाद में लोग कॉफी शॉप्स, पब्स में आयोजित होने वाले क्रायिंग सेशन में शामिल हो रहे हैं। सूरत में तो 'हेल्दी क्रायिंग क्लब' को चलते हुए अब आठ वर्ष हो गए हैं, जिसके सदस्य हर माह के अंतिम रविवार को एकत्र होते हैं और जी भरकर रोते हैं।

ऐसे हुई क्रायिंग क्लब की शुरुआत

सबसे पहले टोक्यो (जापान) के हिरोकी तेराई ने ग्रुप थेरेपी के तौर पर वर्ष 2013 में रुइ कत्सू (आंसू बहाना) आरंभ किया। पहले तेराई, तलाक समारोह आयोजित करने के लिए विख्यात थे, जिसमें पूर्व जोड़े अपनी शादी की अंगूठी पर हथोड़े मारते थे ताकि अपने अतीत के बोझ से मुक्त हो सकें। तेराई ने बाद में आक्रामकता को खत्म करते हुए इसका एक कोमल रूप विकसित किया, जिसमें हल्की रोशनी में भावनात्मक फिल्में देखी जाती हैं। आपसी सहमति से एक-दूसरे को खाना खिलाते हैं और क्रायिंग सेशन में लोग हिस्सा लेते हैं। अपने देश में 'स्मॉल वर्ल्ड' (डिजिटल से इतर रियल सोशल कनेक्शन को प्रमोट करने वाली संस्था) के संस्थापक सौरव आर्य ने क्रायिंग क्लब लांच किया। इसे शुरू करने के पीछे उनका तर्क यह था कि 'ऑनलाइन दोस्तों से घिरे रहने के बावजूद लोग अकेलापन महसूस कर रहे हैं।' इस क्लब के सत्र प्राइवेट कैफे व पब्स में आयोजित किए जाते हैं, जिनमें दोस्त के लिविंग रूम जैसा एहसास होता है। सेशन में सभी को बोलना जरूरी नहीं होता। बहुत से लोग दूसरों को सिर्फ सुनते हैं। सुनते हुए ही उसके दर्द को सुनकर या अपना दर्द यादकर वे रोने लगते हैं। सत्र में पुरुष और महिलाएं सभी भाग लेते हैं। आमतौर पर इसमें 20-40 वर्ष के लोग आते हैं।

रोने की विभिन्न वजहें

अमेरिका में रहने वाले 45 वर्षीय रमेश, मुंबई लौटे थे। वह ग्रुप एक्टिविटी की तलाश करते हुए एक ऐसी जगह पहुंच गए, जिसकी उन्हें उम्मीद भी न थी। एक क्रायिंग क्लब, जिसका आयोजन मुंबई के एक बार में हो रहा था, जो उन्हें दिलचस्प लगा, विशेषकर इसलिए कि उन्हें भी अपनी कुछ भावनाओं से मुक्ति पानी थी। रमेश को वह जगह नकारात्मक भावना दूर करने से अधिक संपर्क स्थापित करने वाली अधिक लगी, क्योंकि उनकी वहां ऐसे लोगों से बॉन्डिंग बनी, जो अपनी नकारात्मक भावनाओं से जूझ रहे थे। सच यही है कि ऐसे क्लबों में आने वाले लोगों के रोने के विविध कारण हो सकते हैं- ब्रेकअप, जीवन में अनपेक्षित परिवर्तन या नुकसान। अनाम थकान जिसे शब्दों में व्यक्त न किया जा सके। एक लड़की तो रोने के लिए केवल इसलिए क्रायिंग क्लब में पहुंची कि उसने पांच दिन से किसी से बात ही नहीं की थी। उसे अपने गुमनाम होने का एहसास हो रहा था। उसने सत्र में दो नए दोस्त बनाए। सत्र में शामिल होने की एक व्यक्ति ने यह वजह बताई, 'मुझे राहत नहीं चाहिए। मुझे तो बस वह जगह चाहिए, जहां मेरी उदासी को बरकरार रहने का अवसर मिले।'

सच यह है कि अलग-अलग स्थानों और परिवेश के लोग अलग-अलग तरह से रोते हैं। महानगरों में लोग बर्नआउट और अकेलेपन की वजह से रोते हैं। छोटे शहरों में रहने वाले लोग अकसर पारिवारिक या सामाजिक दबाव के कारण रोते हैं। ऐसे क्लबों में एक बार जब रोना बंद हो जाता है, तो आपसी समानुभूति का संपर्क स्थापित होना शुरू हो जाता है। लोग नए संपर्क और मुस्कान लेकर लौटते हैं। *

लाफ्टर मैन से बने क्रायिंग मैन

लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स ने कमलेश मसाला वाला को 'पहला लाफ्टर टीचर' घोषित किया था। तकरीबन आठ साल पहले उन्होंने तय किया कि लोगों को 25 साल तक बहुत हंसा लिया, अब उन्हें रुलाया जाए और उन्होंने 'हेल्दी क्रायिंग क्लब' की स्थापना सबसे पहले गुजरात के सूरत में की। गौरतलब है कि 2008 में मसाला वाला ने इंटरनेशनल लाफ्टर योग कांफ्रेंस के दौरान अविरल रोने की प्रतियोगिता जीती थी। उन्होंने अपनी दिवंगत माता को याद करके एकदम से रोना शुरू कर दिया था। बाद में उन्हें एहसास हुआ कि भावनात्मक आंसुओं में भी मेडिकल लाभ होते हैं। अब तो कई स्टडीज में सामने आया है कि जब हम दुःख, तनाव या कुंठा की वजह से रोते हैं तो हमारा शरीर कोर्टिसोल स्ट्रेस हॉर्मोन उत्पन्न करता है। हंसने से जो आंसू निकलते हैं, उनमें यह हार्मोन नहीं होता है। यानी सुकून महसूस करने के लिए हंसी के साथ आंसू भी जरूरी हैं।

भूटान, ग्लोबल कंपैशन डिक्लेरेशन (जीसीडी) पर हस्ताक्षर करने वाला पहला देश बना है। क्या है यह डिक्लेरेशन और किस तरह समाज की चुनौतियों से निपटने में यह सहायक हो सकता है? इसके साथ ही कुछ ज्वलंत सवालों पर नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित कैलाश सत्यार्थी ने साझा किए अपने विचार।

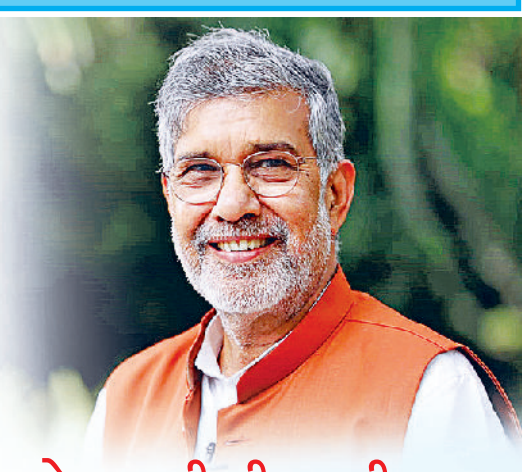

दूसरे की तकलीफ को अपनी पीड़ा की तरह महसूस करने से जन्मती है करुणा की शक्ति

{ विशिष्ट अभिव्यक्ति/ कैलाश सत्यार्थी }

हाल ही में हमारे पड़ोसी देश भूटान ने ग्लोबल कंपैशन डिक्लेरेशन (जीसीडी) पर हस्ताक्षर किया है। ग्लोबल कंपैशन डिक्लेरेशन, एक महत्वपूर्ण, अनूठा दस्तावेज है। पिछले साल सितंबर में संयुक्त राष्ट्र संघ के महाधिवेशन में सत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कंपैशन ने मोनाको देश की सहभागिता में एक विशेष बैठक आयोजित किया, जो करुणा के वैश्वीकरण से शासन तंत्र को करुणामय बनाने के विचार से आयोजित किया गया था। उस उच्च स्तरीय बैठक में राष्ट्राध्यक्ष, संयुक्त राष्ट्र संघ के वरिष्ठ अधिकारी, नोबेल पुरस्कार विजेता और मानवाधिकार कार्यकर्ता शामिल हुए थे। इसमें संवाद के बाद जो सहमति बनी, वह एक घोषणापत्र के रूप में सामने आई, जिसमें सबसे बड़ी बात यह थी कि उन्होंने करुणा की हमारी बदली परिभाषा को स्वीकार किया। सामान्य तौर पर करुणा को एक नाजुक भाव मान लिया जाता है। हमारी परिभाषा में करुणा वह शक्ति है, जो दूसरे की तकलीफ को अपनी पीड़ा की तरह महसूस करने से जन्मती है और उसके समाधान की प्रेरणा शक्ति बनती है। इसी के आधार पर समाज के हर क्षेत्र में विवेकपूर्ण समाधान की संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए यह घोषणापत्र तैयार हुआ। भूटान पहला देश है, जिसने इसे अनुमोदित किया और वहां के प्रधानमंत्री ने इस पर हस्ताक्षर किया। बाद में एक अन्य छोटे से देश तिमोर लेस्ते ने भी हस्ताक्षर किया।

विकसित करना होगा करुणामय नेतृत्व: आज जब समाधानकर्ताओं और पीड़ितों के बीच खाई चौड़ी होती चली जा रही है, तब यह आवश्यक है कि शासन व्यवस्था, शिक्षा, चिकित्सा, न्याय, मीडिया आदि में करुणामय नेतृत्व विकसित किया जाए। इसका अर्थ यह हुआ कि इन सभी संस्थाओं या क्षेत्रों में लोग दूसरे की समस्याओं को अपना समझकर उसके निपटान के लिए नेतृत्व करें। यह काम लगातार व्यावहारिक प्रशिक्षण संवाद और अनुभवजनित ज्ञान जैसे प्रयोगों से संभव है। ऐसे कुछ वैज्ञानिक शोध हुए हैं, जिनसे साबित हुआ है कि अस्पतालों में चिकित्साकर्मियों के करुणाजनित व्यवहार के परिणामस्वरूप मरीजों का जल्दी और प्रभावशाली उपचार हो सका। इसी तरह कॉरपोरेट जगत में करुणामय नेतृत्व के कारण प्रबंधन में परस्पर विश्वास और सक्रिय भागीदारी, कर्मचारियों में संतोष, उत्साह और कंपनियों में उत्पादन-मुनाफा बढ़ गया।

युद्ध का खामियाजा भुगतते हैं बच्चे: यह पूरी मानवता के लिए बेहद चिंताजनक तथ्य है कि आज दुनिया में लगभग 47 करोड़ बच्चे युद्धग्रस्त क्षेत्रों में रहने को विवश हैं। हम सबको यह समझना जरूरी है कि इतिहास में बच्चे कभी युद्ध का कारण नहीं रहे। न ही कभी वे युद्ध लड़ते हैं। परंतु युद्ध का सबसे ज्यादा खामियाजा उन्हीं को भुगतना पड़ता है। परिवार से बिछड़ना, पढ़ाई छूट जाना, मनोवैज्ञानिक और मानसिक आघात जैसे स्थाई घाव उनके पूरे जीवन को प्रभावित करते हैं। दुर्भाग्य है कि वे हमारी राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय प्राथमिकता नहीं हैं। यदि वैश्विक नेताओं, नेतृत्वकर्ताओं ने अपनी जिम्मेदारी को ठीक से समझा होता तो दुनिया भर में इतने बच्चे असमय मौत के मुंह में न समाते।

आवश्यक है करुणामय शिक्षा प्रणाली: जब तक शिक्षा का उद्देश्य खुद की और देशों की आर्थिक तरक्की मात्र रहेगा, तब तक नागरिक स्वार्थी और आत्मकेंद्रित बनते रहेंगे। इसलिए जरूरी है कि पाठ्यक्रम और शिक्षा नीतियों के माध्यम से बच्चों में एक-दूसरे के प्रति नैतिक जवाबदेही का भाव सिखाया जाए, जिसे हम करुणामय शिक्षा प्रणाली कहते हैं।

तभी होगा वैश्विक चुनौतियों का समाधान: आज दुनिया के सामने मौजूद प्रदूषण और जलवायु परिवर्तन जैसी तमाम वैश्विक चुनौतियों के लिए कई कारण जिम्मेदार हैं। सबसे बड़ा कारण कथनी और करनी का अंतर है। उपभोक्तावाद, औद्योगीकरण और मुनाफा पर आधारित जीवनशैली, पृथ्वी और पर्यावरण के विनाश का बड़ा कारण है। दूसरा कारण, इस दिशा में राजनैतिक इच्छा शक्ति का अभाव है। तीसरा, पर्यावरण विनाश और संरक्षण एकदेशीय नहीं हो सकता। यह धरती पर रहने वाले सभी लोगों को प्रभावित करता है। कम आबादी वाले अमीर देश, ज्यादा आबादी वाले गरीब देशों से कहीं अधिक कार्बन उत्सर्जन करते हैं। इसलिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जवाबदेही तय होनी चाहिए।

पर्यावरण संरक्षण के लिए मिसाल है भूटान: भूटान ने ऐसे कई प्रयोग किए हैं, जो पर्यावरण, मानवता और संस्कृति की रक्षा के लिए जाने जाते हैं। इसमें ग्रॉस हैप्पीनेस इंडेक्स भी शामिल है। खुशी के इस पैमाने को दूसरे कई देश भी मानते हैं। साथ ही भूटान के संविधान में यह प्रावधान है कि देश का सत्तर प्रतिशत जमीन वन क्षेत्र रहेगा, जिससे जैव विविधता और पर्यावरणीय संतुलन बना रहे। वहां के महाराज, जिग्मे खेसर नामग्येल वांगचुक और राजकुमारी सोनम जी सहित राजपरिवार, देश के मुख्य न्यायाधीश और अनेक राजनेताओं के साथ करुणामय समाज बनाने पर ठोस सहमति बनी, जिसे हम मिलकर लागू करने का समयबद्ध कार्यक्रम बना रहे हैं। *

प्रस्तुति: सरस्वती रमेश

{ लघुकथाएं }

यादों का बैंक

शहर में एक नया बैंक खुला-यादों का बैंक। यहां लोग पैसे नहीं, अपनी यादें जमा करते थे। खुशियों की यादों पर अच्छा ब्याज मिलता था, जबकि दुखद यादें हटाने के लिए लोग फीस देते थे।

एक दिन पचपन वर्षीय अजित वहां पहुंचा। उसने अपनी सबसे प्रिय याद जमा करने का फॉर्म भरा। कर्मचारी ने पूछा, 'कौन-सी याद है?'

अजित मुस्कुराया, 'वह दिन, जब मेरा पांच साल का बेटा पहली बार साइकिल चलाते हुए गिर पड़ा था। रोते-रोते फिर उठा और बोला-पापा, मैं हारूंगा नहीं।'

बैंक कर्मचारी चौंका, 'इतनी प्यारी याद क्यों जमा करना चाहते हैं? इस पर तो आपको अच्छा लाभ मिलेगा।'

अजित ने धीमे स्वर में कहा, 'इसलिए क्योंकि मेरा बेटा अब इस दुनिया में नहीं है। उसकी याद हर दिन मुझे रुलाती है।'

याद बैंक की मशीन ने अजीत की उस स्मृति को उसके मन से निकाल कर जमा कर लिया। अजित हल्का महसूस करने लगा।

कुछ महीने बाद वह फिर बैंक पहुंचा। इस बार उसके चेहरे पर बेचैनी थी, 'मुझे अपनी जमा की हुई याद वापस चाहिए।' उसने बैंक कर्मी से कहा।

'लेकिन क्यों? आपने तो दर्द से छुटकारा पाने के लिए उसे जमा किया था!' अजित की आंखें भर आईं। वह बोला, 'दर्द चला गया, पर उसके साथ मेरा बेटा भी चला गया। अब मैं रोता नहीं, लेकिन मुस्कुरा भी नहीं पाता। समझ में आया कि कुछ दुख बोझ नहीं होते, वे हमारे अपनों के आखिरी निशान होते हैं।'

बैंक कर्मी ने उसकी याद लौटा दी। बैंक से बाहर निकलते समय अजित की आंखों में आंसू थे, पर होंठों पर मुस्कान भी। उसे पहली बार लगा कि हर घाव भर जाना जरूरी नहीं, कुछ घाव ही हमें इंसान बनाए रखते हैं। *

-कृति आरके जैन

श्रम का संगीत

पत्नी खर्राटे ले रही थी। पति की नींद खर्राटे की आवाज से टूट गई थी।

यह पहली ही बार था, जब पति को पत्नी के खर्राटे सुनने का अवसर मिला था। रोज तो पत्नी ही पति के खर्राटे की वजह से नींद टूटने की शिकायत किया करती थी, आज पति को यह मौका मिल गया था!

बस सुबह होने की प्रतीक्षा थी।

पति फिर से सोने की कोशिश करने लगा। आंखें मूंदते ही पत्नी की दिनचर्या उसकी आंखों के आगे आ गई, सुबह-सुबह उठना, बच्चों को तैयार करना, नाश्ता कराना, स्कूल बस तक छोड़ना। आकर पति को जगाना, चाय पिलाना। नाश्ते और लंच की तैयारी में लग जाना। पति के कपड़े निकालकर रखना। उनको नाश्ता कराना। उनका लंच पैक करना। पति के जाने के बाद घर की साफ-सफाई और गंदे कपड़ों को वॉशिंग मशीन में डालना। नहाना-धोना, पूजा-पाठ, नाश्ता करना। बच्चों को स्कूल से लाना। खिलाना-पिलाना, उनको होमवर्क करवाना। शाम में बच्चों को पार्क ले जाना। फिर साग-सब्जी, दूध, फल और जरूरी सामानों की खरीदारी करना। सबके लिए रात का खाना पकाना। पति के आने पर उन्हें चाय-पानी देना। बच्चों को खिलाकर पति के साथ खाने बैठना। थोड़ी देर टीवी पर कोई सीरियल देखना और फिर सो जाना।

'यह खर्राटा तो श्रम का संगीत है!' पता नहीं कहां से पति के मन में यह साहित्यिक भाव आया?

पत्नी के खर्राटे अब उसे संगीतमय लगने लगे। खर्राटों से उसे अब कोई शिकायत नहीं रही। *

- संजीव ठाकुर

{ पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण }

संवेदना से भरी कहानियां

चार दशक से अधिक समय से कहानी लेखन में सक्रिय वरिष्ठ लेखक गोविंद सेन की चयनित कहानियों का संकलन कुछ समय पूर्व प्रकाशित होकर आया है। इसमें उनकी अठारह कहानियां संकलित हैं।

ये कहानियां जीवन की विडंबनाओं और रिश्तों की पेचीदगियों को उजागर करने के साथ ही हमारी संवेदनाओं को झकझोरती भी हैं। मिसाल के तौर पर 'स्पीड ब्रेकर' कहानी मानवीय मनोवृत्ति को सामने लाती है, जिसमें पढ़े-लिखे व्यक्ति के मन में सहज तौर पर हीनभावना जन्म लेती है, जब उसे अपने से कम शिक्षित व्यक्ति, आर्थिक रूप से अधिक संपन्न दिखता है।

गरीब तबके के लोगों का जीवन, किस तरह छोटी-छोटी चीजों से भी वंचित रहने का दंश सहता रहता है, इसका मार्मिक वर्णन 'गुमशुदा चांद की वापसी' में किया गया है। संग्रह की एक छोटी सी कहानी 'दाढ़ी' में बहुत सरलता से सामाजिक विषमता की दुखती रग पर अंगुली रखी गई है।

संग्रह की लगभग सभी कहानियां पठनीयता से भरपूर हैं। इन कहानियों में न तो किसी वाद का झंडा उठाया गया है, न ही किसी विमर्श को लेकर हाय-तौबा की गई है। जानबूझ कर गढ़े गए शिल्प और भाषायी कलाबाजियों से मुक्त ये कहानियां बहुत सरल और सहज तरीके से हमारे मन के किसी कोने में हमेशा के लिए दर्ज होने में सक्षम हैं। *

किताब: चयनित कहानियां (कहानी-संग्रह), **लेखक:** गोविंद सेन, **मूल्य:** 225 रुपए, **प्रकाशक:** न्यू वर्ल्ड पब्लिकेशन, नई दिल्ली

लोक-संस्कृति / शिखर चंद जैन

दुनिया के अनेक देशों की संस्कृतियों में बादल और बारिश को उम्मीद, समृद्धि और जीवन का संदेशवाहक माना जाता है। इसी खुशी को अलग-अलग देशों में अनूठे उत्सवों, लोक-परंपराओं, प्रार्थनाओं, नृत्य और सामुदायिक अनुष्ठानों के जरिए उत्साहपूर्वक मनाया जाता है। वर्षा ऋतु से जुड़े ऐसे ही कुछ उत्सवों पर एक नजर।

दुनिया भर में मनाते हैं रंग-बिरंगे वर्षा उत्सव

वर्षा प्रार्थना महोत्सव, वियतनाम

मार्च के शुष्क मौसम में वियतनाम के हा जियांग प्रांत में लो लो समुदाय के लोग पारंपरिक नृत्य और प्रार्थना के माध्यम से बादलों से पानी बरसाने की गुहार लगाते हैं। इसमें तांबे के प्राचीन ड्रम बजाना और पुजारी (शमन) द्वारा प्राकृतिक शक्तियों को प्रसन्न करने वाले मंत्रोच्चार शामिल होते हैं, जिसके बाद सामूहिक भोज का आयोजन होता है। वियतनाम का एक अन्य श्वेत थाई अल्पसंख्यक समुदाय जेन, बारिश के आगमन पर फोन महोत्सव मनाता है। यह उत्सव उत्तर-पश्चिमी वियतनाम की माई चाऊ की खूबसूरत घाटी में होता है। इस उत्सव में गांव के लोग पारंपरिक वाद्ययंत्र बजाते हैं, सामूहिक रूप में लोक गीत गाते हैं और अच्छी बारिश की कामना के लिए अनुष्ठान करते हैं। वियतनाम में रहने वाले जराई समुदाय के लोग प्ली ओई नामक वर्षा प्रार्थना उत्सव, किसी राष्ट्रीय ऐतिहासिक-सांस्कृतिक स्थल पर सामूहिक तौर पर मनाते हैं। यह आयुन हा कम्यून और जिया लाई प्रांत में मनाया जाता है। *

मकाहिकी उत्सव, अमेरिका

अमेरिका के हवाई द्वीप में मनाया जाने वाला मकाहिकी उत्सव वर्षा ऋतु, उर्वरता और शांति के देवता 'लोनो' को समर्पित है। चार महीनों तक चलने वाले इस पारंपरिक लोक उत्सव में कृषि कार्यों को रोककर दावतें, संगीत और पारंपरिक नृत्य किए जाते हैं। भरपूर वर्षा और उससे उपजी फसल के लिए देवता को धन्यवाद दिया जाता है। इस उत्सव के दौरान किसी भी तरह का विवाद, झगड़ा करना वर्जित होता है। सभी मिलकर प्रेम और सौहार्द के साथ सामूहिक तौर पर पहली बारिश का जश्न मनाते हैं। *

लोंगटैटो महोत्सव, चीन

चीन में मनाए जाने वाले पारंपरिक त्योहार लोंगटैटो में लोग बारिश के देवता माने जाने वाले 'ड्रैगन' के प्रति अपनी आदरांजलि अर्पित करते हैं, ताकि वे प्रसन्न रहें और उनकी कृपा से पूरे वर्ष कृषि के लिए अच्छी वर्षा होती रहे। 'लोंगटैटो' का शाब्दिक अर्थ 'अजगर (ड्रैगन) का अपना सिर उठाना' होता है। प्राचीन काल में चीन के निवासियों का मानना था कि इस दिन के बाद बारिश बढ़ जाती है, क्योंकि बारिश लाने वाला ड्रैगन राजा अपनी सर्दियों की नींद से जाग जाता है। इस त्योहार की सबसे प्रसिद्ध परंपरा इस दिन बाल कटवाना है। चीनी लोगों का मानना है कि इस दिन नाई के पास जाने या बाल कटवाने से दुर्भाग्य दूर होता है और पूरे साल अच्छी किस्मत बनी रहती है। इस दिन लोग 'ड्रैगन' नाम से जुड़े या ड्रैगन के अंगों का प्रतीक माने जाने वाले व्यंजन खाते हैं, जैसे- ड्रैगन की मूंछों वाले नूडल्स (लॉन्गक्सू नूडल्स) और पकौड़ी, ताकि अच्छी फसल और मौसम के लिए अपने भोजन के जरिए भी प्रार्थना की जा सके। *

बरशा बंदोना, बांग्लादेश

हमारे पड़ोसी देश बांग्लादेश में आषाढ़ महीने के पहले दिन मनाए जाने वाले इस उत्सव बरशा बंदोना में संगीत, कविता पाठ और साल की पहली बारिश में स्नान करने की अनूठी परंपरा है। इस उत्सव में ग्रामीण महिलाएं आसमानी नीले रंग की साड़ियां पहनकर बादलों का स्वागत करती हैं। वर्षा का आह्वान करती हैं। *

हरियाली तीज पर झूला झूलती महिलाएं

प्रकृति से जुड़ाव का पर्व साओ जोआओ

भारत में मनाए जाने वाले वर्षा उत्सव

अपने देश भारत के अलग-अलग भागों में भी बारिश के आगमन पर, इसके स्वागत के लिए कई पारंपरिक उत्सव मनाए जाते हैं।

हरियाली तीजः राजस्थान समेत उत्तर भारत के कई राज्यों के ग्रामीण और आंचलिक क्षेत्रों में वर्षा ऋतु के आगमन पर प्रकृति की हरियाली और बादलों का स्वागत करने के लिए हरियाली तीज पर्व मनाते हैं। इस पर्व से धार्मिक आस्था भी जुड़ी हुई है। महिलाएं भगवान शिव और माता पार्वती की पूजा करती हैं और व्रत रखती हैं। इसके अलावा आपसी समुदाय और आस-पड़ोस की महिलाएं किसी बाग-बगीचे में सामूहिक तौर पर झूला झूलती हैं और पारंपरिक लोकगीत गाती हैं।

साओ जोआओः मानसून की शुरुआत में गोवा में मनाया जाने वाला अनोखा त्योहार है, साओ जोआओ। इस पर्व में युवा मानसूनी बारिश के पानी से भरे कुओं और तालाबों में कूदकर प्रकृति के इस उपहार का जश्न मनाते हैं। इस उत्सव पर लोग सिर पर फलों के मुकुट भी पहनते हैं। इस तरह यह पर्व प्रकृति से हमारे जुड़ाव और उस पर निर्भरता को प्रकट करता है।

सापुतारा मानसून महोत्सवः गुजरात राज्य में मनाया जाने वाला सापुतारा मानसून महोत्सव, भारत के चुनिंदा उत्सवों में से है जो विशेष रूप से आसमान में तैरते बादलों, धुंध और बारिश के मनोरम मौसम को समर्पित है। इस पर्व से भी स्थानीय लोक संस्कृति की कई परंपराएं जुड़ी हुई हैं।

लक्ष्य निर्धारण से मिलेगी करियर में निश्चित सफलता

बदलते दौर में किसी करियर में सफल होने के लिए केवल मेहनत नहीं, बल्कि निश्चित लक्ष्य और सही दिशा का होना भी जरूरी है। स्पष्ट लक्ष्य व्यक्ति को अवसर पहचानने, बेहतर निर्णय लेने और निरंतर सीखते रहने की प्रेरणा देते हैं। अपना लक्ष्य कैसे निर्धारित करें, किस तरह उसे प्राप्त करें, बहुत उपयोगी सलाह।

सेल्फ इंप्रूवमेंट

नरेंद्र कुमार

मशहूर करियर काउंसलर रिचर्ड एन. बोलस ने अपनी किताब 'व्हाट कलर इज योर पैराशूट' में लिखा है, 'करियर में ऊंची उड़ान भरनी है तो पहले अपनी मंजिल तय करें।' तकनीक, एआई, ऑटोमेशन और बदलते रोजगार बाजार ने करियर की दुनिया को पूरी तरह से बदल दिया है। आज सफलता केवल कड़ी मेहनत से नहीं मिलती बल्कि उस सही दिशा से मिलती है, जिसे लक्ष्य निर्धारण या गोल सेटिंग कहा जाता है।

लक्ष्य देता है स्पष्ट दिशाः मानव मस्तिष्क तब सबसे प्रभावी ढंग से काम करता है, जब उसे स्पष्ट उद्देश्य हासिल होता है। मनोविज्ञान बताता है कि लक्ष्य हमारे ध्यान, ऊर्जा और निर्णयों को एक दिशा में केंद्रित करते हैं। बिना लक्ष्य के व्यक्ति अनेक काम करता है, लेकिन उसकी ऊर्जा बिखर जाती है। जबकि स्पष्ट लक्ष्य उसे बताते हैं कि कौन-सा काम महत्वपूर्ण है और कौन-सा बिना किए भी चल जाएगा। यही कारण है कि उद्यमी, वैज्ञानिक, खिलाड़ी और प्रशासक अपने बड़े उद्देश्यों को छोटे-छोटे लक्ष्यों में बांटकर काम करते हैं।

गोल सेटिंग से बढ़ती उत्पादकताः स्पष्ट लक्ष्य व्यक्ति को समय का महत्व समझाता है। जब किसी व्यक्ति के पास निर्धारित लक्ष्य होता है, तो वह लगातार सीखने के लिए प्रेरित होता है। मसलन यदि किसी का उद्देश्य साइबर सुरक्षा विशेषज्ञ बनना है तो नेटवर्किंग, क्लाउड सिक्योरिटी, एथिकल हैकिंग और एआई आधारित सुरक्षा प्रणालियों का लगातार अध्ययन करता है। वास्तव में यही सीखने की प्रवृत्ति भविष्य में उसकी बड़ी ताकत बनती है।

निर्णय लेना सीखिएः करियर में हर दिन छोटे-बड़े निर्णय लेने होते हैं- नई नौकरी स्वीकारें या नहीं, कौन-सा कोर्स करें, किस तकनीक को सीखें, किस अवसर को छोड़ दें? ये ऐसी बातें हैं जो हर उस व्यक्ति के सामने आती ही आती हैं, जो अभी अपने करियर में आगे बढ़ने की दिशा में होता है। ऐसे में यदि आपका लक्ष्य स्पष्ट है तो निर्णय लेना सरल हो जाता है, क्योंकि हर विकल्प को उसी कसौटी पर परखा जाता है कि वह हमें हमारे उद्देश्य के कितना निकट ले जाएगा।

छोटे-छोटे लक्ष्य प्राप्त करें: जब व्यक्ति छोटे लक्ष्य पूरा करता है तो उसका अपनी क्षमता पर भरोसा बढ़ने लगता है। वास्तव में यही आत्मविश्वास उसे बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए प्रेरित करता है और यही आत्मविश्वास बड़े लक्ष्य को हासिल करने के लिए उसका आधार बनता है। करियर की लंबी यात्रा में यह मानसिक ताकत बेहद जरूरी होती है।

बदलें अपनी रणनीतिः जिन लोगों के पास कोई स्पष्ट लक्ष्य नहीं होता, वे एक समय के बाद ठहर जाते हैं। कोई परियोजना अपेक्षित परिणाम नहीं देती है। ऐसे में वे बार-बार असफल होने लगते हैं। लेकिन जिनके पास अपने लक्ष्य की स्पष्ट दिशा होती है, वे इन बातों से परेशान नहीं होते। वे अपनी रणनीति बदलते हैं, सीखते हैं और फिर आगे बढ़ जाते हैं।

मजबूत नेटवर्क बनाएं: जब व्यक्ति के करियर का अपना लक्ष्य तय होता है, तो वह अपने तय लक्ष्य के वरिष्ठों और विशेषज्ञों के साथ नेटवर्किंग मजबूत करता है, क्योंकि उसे पता होता है कि आज नहीं तो कल उसे इन्हीं के साथ काम करना है। यह नेटवर्क इसके लिए बहुत काम का साबित होता है। *

ऐसे डिसाइड करें टार्गेट

कुछ करियर काउंसलर लक्ष्य तय करने के मामले में एक स्मार्ट मॉडल अपनाने की सलाह देते हैं। उनके अनुसार ऐसे लक्ष्य बनाएं, जो बिल्कुल स्पष्ट हों, जिसे हासिल किया जा सके, यानी जो आपकी क्षमताओं के अनुकूल हों। लक्ष्य ऐसा हो, जो वर्तमान समय में प्रासंगिक करियर हो, जिस तक एक समयबद्ध रफ्तार से पहुंचा जा सके।

नेचुरल प्लेस / बाल मुकुंद ओझा

स्टेपिंग स्टोंस खूबसूरत रिवर क्रॉसिंग

लंदन, दुनिया के अग्रणी पर्यटन स्थलों में से एक है। यहां अगर तापमान 22 डिग्री सेल्सियस हो तो यह अच्छे मौसम का परिचायक माना जाता है। लंदन प्रवास के दौरान एक दिन ऐसे ही अनुकूल मौसम का फायदा उठाते हुए हमने सपरिवार घूमने का प्रोग्राम बनाया और पहुंच गए बॉक्स हिल की तलहटी पर बहने वाली मोल नदी पर बने मशहूर स्टेपिंग स्टोंस पर।

खूबसूरत वॉकिंग प्लेसः मोल नदी, दक्षिणी इंग्लैंड में टेम्स नदी की एक सहायक नदी है। यह गैटविक एयरपोर्ट के पास वेस्ट ससेक्स में निकलती है और सरे शहर से उत्तर-पश्चिम में 80 किमी. बहकर हैंपटन कोर्ट पैलेस में टेम्स नदी तक पहुंचती है। यह नदी सरे जिले के मोल वैली को अपना नाम देती है। यह खूबसूरत वॉकिंग प्लेस, साउथ लंदन स्थित हमारे घर से लगभग 50 किमी. दूर ही है। स्टेपिंग स्टोंस, सरे काउंटी स्टेट के इस हिस्से में एक मशहूर जगह है और नदी को बहते हुए बिल्कुल करीब से देखने के लिए यह एक परफेक्ट जगह है।

इसे पार करना है रोमांचकः स्टेपिंग स्टोंस, पत्थरों का एक सेट है, जिसे एक काम चलाऊ रास्ता बनाने के लिए लगाया गया है। यह पैदल चलने वालों को एक प्राकृतिक नदी के रास्ते से होकर ले जाता है। ये स्टोन यानी पत्थर विक्टोरियन जमाने से बॉक्स हिल आने वाले पर्यटकों का पसंदीदा स्थल रहे हैं। बच्चे से लेकर बुजुर्ग तक, पत्थर से पत्थर पर कदम रखते हैं और बिना फिसले संतुलन बनाए रखने की कोशिश करते हैं। ये बैलेंस ब्लॉक, शारीरिक गतिविधि और सक्रिय प्रयास को बढ़ावा देते हैं। विशेषकर बच्चे, किशोर और युवाओं को ये स्टेपिंग स्टोंस, पूरे शरीर के व्यायाम के लिए कूदने, खिंचाव, चढ़ाई और संतुलन बनाने के लिए प्रेरित करते हैं। मैंने भी नदी को इन लगभग 15 स्टेपिंग स्टोंस पर चलकर पार किया। कई बार बैलेंस बिगड़ा मगर तुरंत संभल भी गया। एक बारगी तो ऐसे लगा जैसे इस बार तो गिर ही जाऊंगा, मगर इन स्टेपिंग स्टोंस को आखिर पार कर ही लिया।

दूसरी तरफ हैं शानदार नजारेः एक बार स्टेपिंग स्टोन पार करने के बाद, रास्ता नदी के साथ-साथ चलता है, जहां से पानी और आस-पास की मंत्र मुग्ध कर देने वाली हरियाली के खूबसूरत नजारे दिखते हैं। बॉक्स हिल स्टेपिंग स्टोंस वॉक, सरे हिल्स नेशनल लैंडस्केप में 3.2 किमी. का हाइकिंग रूट है। लगभग 1 घंटे में 477 फीट की चढ़ाई चढ़ लेते हैं। वॉक का यह हिस्सा थोड़ा मुश्किल है, लेकिन बहुत रोमांचक है। *

मर्लिन मुनरो से इंस्पायर रहीं बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेसेस

हॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेसेस में शामिल रहीं मर्लिन मुनरों ने दुनिया भर के दर्शकों को ही नहीं, हिंदी सिनेमा की कई फेमस एक्ट्रेसेस को भी इंस्पायर किया। मर्लिन मुनरो की जन्मशती केवल एक एक्ट्रेस को याद करने का अवसर नहीं, बल्कि उस खूबसूरती, ग्लैमर और व्यक्तित्व के प्रभाव को समझने का भी समय है।

ग्लैमर आइकन

डी. जे. नंदन

साल 2026, 20वीं सदी की सबसे मशहूर हॉलीवुड एक्ट्रेस में से एक मर्लिन मुनरो का जन्मशती वर्ष है। मर्लिन मुनरो की जन्मशती केवल हॉलीवुड के लिए खास नहीं है, बॉलीवुड के लिए भी यह विशेष है। क्योंकि बॉलीवुड में भी मर्लिन मुनरो के ग्लैमर ने न केवल अपनी स्थाई छाप छोड़ी है बल्कि आज भी बॉलीवुड के ग्लैमर में मर्लिन मुनरो की साफ-साफ मौजूदगी देखी जा सकती है। हालांकि मर्लिन ने कभी-भी बॉलीवुड की कोई फिल्म नहीं की, लेकिन उनकी छवि, उनका ग्लैमर, उनका फैशन सेंस और कैमरे के सामने उनकी सहज आत्मविश्वास से भरी मौजूदगी ने बॉलीवुड की कई पीढ़ियों को प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से प्रभावित किया है।

मधुबाला

जीनत अमान

बॉलीवुड पर प्रभावः वास्तव में 1950 और 1960 के दशक का भारतीय सिनेमा, परिवर्तन के दौर का सिनेमा था। पहले जहां नायिकाएं सादगी और पारंपरिक पहनावों तक सीमित रहती थीं, वहीं धीरे-धीरे आधुनिक परिधान, पश्चिमी फैशन और कहीं ज्यादा आत्मविश्वासी नायिका पर्दे पर दिखाई देने लगीं, जिसमें मर्लिन मुनरो के ग्लैमर का साफ-साफ असर देखा जा सकता है। भारतीय फिल्मों की नायिकाओं ने मर्लिन मुनरो से बहुत कुछ सीखा है और बहुत कुछ उनकी तरह बनने और ढलने की भी कोशिश की है। मर्लिन मुनरो की मुस्कान, कैमरे के सामने संवाद अदा करने का उनका अंदाज, बॉडी लैंग्वेज और फैशन ने भारतीय फिल्मकारों को यह एहसास कराया कि ग्लैमर भी अभिनय की भाषा का हिस्सा हो सकता है।

मर्लिन मुनरो से मधुबाला की तुलनाः बॉलीवुड की जिस नायिका पर सबसे पहला और सबसे ज्यादा मर्लिन मुनरो का असर दिखा, वह मधुबाला थीं। उस दौर में अकसर मधुबाला की तुलना मर्लिन मुनरो से की जाती थी। दोनों ही असाधारण सुंदर थीं, दोनों के पास सहज मुस्कान का जबर्दस्त जादू था और दोनों ही कम उम्र में असमय मृत्यु को प्राप्त हुईं। हिंदी सिनेमा के दर्शक मधुबाला को मर्लिन मुनरो की तरह देखते थे। हालांकि दोनों की अभिनय शैली और फिल्मी यात्रा एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे। फिर भी यह सच है कि दोनों अपने-अपने देशों में सौंदर्य और आकर्षण का स्थाई प्रतीक बन गईं। मधुबाला की लोकप्रियता भारतीय सांस्कृतिक परिवेश में विकसित हुई, जबकि मर्लिन वैश्विक पॉप कल्चर की पहचान बनीं।

दीपिका पादुकोण

करीना कपूर

परवीन बॉबी-जीनत अमान पर प्रभावः परवीन बॉबी की भी तुलना कई संदर्भों में मर्लिन मुनरो से की जाती है। यह स्वाभाविक भी है, क्योंकि अगर पश्चिमी ग्लैमर की सबसे साफ झलक बॉलीवुड की किसी अभिनेत्री में आजतक सबसे ज्यादा दिखी है, तो वह परवीन बॉबी ही थीं। 1970 और 1980 के दशक में उन्होंने भारतीय फिल्मों में आधुनिक, आत्मनिर्भर और फैशनेबल महिला की नई छवि प्रस्तुत की थी। पश्चिमी परिधान, खुले विचार और कैमरे के सामने सहज आत्मविश्वास ने उन्हें उस दौर की सबसे अलग अभिनेत्री बना दिया था। ऐसे ही जीनत अमान ने एक दौर में न सिर्फ बॉलीवुड अभिनेत्रियों की पारंपरिक परिभाषा को बदला था बल्कि वह भी पश्चिमी फैशन, मर्लिन मुनरो की तरह बड़े-बड़े धूप के चश्मे, स्टाइलिश गाउन पहनने और आत्मविश्वास से बॉलीवुड की सिने स्क्रीन को अपनी मौजूदगी से चौंधिया दिया था। हालांकि जीनत अमान या परवीन बॉबी के बारे में यह नहीं कह सकते कि वे सीधे-सीधे मर्लिन मुनरो को कॉपी करती थीं। इन दोनों ग्लैमरस एक्ट्रेसेस ने मुनरो से प्रेरणा तो ली थी, लेकिन उन्होंने अपना ग्लैमर भारतीय संदर्भों में विकसित किया था।

इन एक्ट्रेसेस पर भी दिखा असरः 1980-90 के दशक में श्रीदेवी ने ग्लैमर और अभिनय का वैसा ही संतुलन पेश किया था, जैसा कभी मर्लिन मुनरो ने हॉलीवुड में किया था। श्रीदेवी के अभिनय में उनका गजब का आकर्षण शामिल होकर उन्हें अद्वितीय बनाता था। बाद की पीढ़ियों में करीना कपूर, प्रियंका चोपड़ा और दीपिका पादुकोण भी अपने ग्लैमर के प्रदर्शन में मर्लिन मुनरो से प्रेरित दिखाई पड़ी हैं। *

ड्रेसिंग स्टाइल-फोटो शूट पर भी दिखा असर

बॉलीवुड में मर्लिन मुनरो का सबसे ज्यादा और गहरा प्रभाव किसी चीज पर पड़ा है, तो वह है कॉस्ट्यूम डिजाइन। यह अकारण नहीं है कि बॉलीवुड की हीरोइनों के बीच सफेद और आइवरी कलर के गाउन सबसे ज्यादा आकर्षण बिखेरते रहे हैं, जो कि मर्लिन मुनरो के सबसे ज्यादा पसंदीदा थे। मर्लिन मुनरो की तरह ही बॉलीवुड की अभिनेत्रियों ने हॉफ शोल्डर और हॉल्टर नेक ड्रेस को अपनी पहचान से बार-बार जोड़ा है। उन्हीं की तरह प्लेटिनम या हल्के सुनहरे बालों का प्रयोग, लाल लिपस्टिक, क्लासिक मेकअप तथा कैमरे की ओर हल्की मुस्कान के साथ पोज देने की शैली, ये सब कुछ बॉलीवुड की अभिनेत्रियों ने मर्लिन मुनरो से ही सीखा। ड्रेसिंग स्टाइल के अलावा फिल्म पत्रिकाओं में अनेक अभिनेत्रियों ने वैसे ही फोटो शूट कराए जैसे एक जमाने में मर्लिन मुनरो कराती थीं। घुमावदार रोशनी, क्लोज अप मुस्कान और क्लासिक हेयर स्टाइल, ये सभी प्रभाव बॉलीवुड में मर्लिन मुनरो से ही आए हैं। आज भी कई सेलिब्रिटी फोटो शूट पोज में ओल्ड हॉलीवुड थीम अपनाते हैं, जिसमें मर्लिन मुनरो की शैली सबसे खास होती है।

बराक नदी केवल जलधारा नहीं, बल्कि ब्रह्मपुत्र के बाद उत्तर-पूर्व भारत की अर्थव्यवस्था, कृषि, संस्कृति और पारिस्थितिकी की दूसरी महत्वपूर्ण जीवन रेखा है। इस नदी की विशेषताओं के बारे में जानिए।

पूर्वोत्तर भारत की दूसरी जीवन रेखा बराक नदी

विशिष्ट नदी

वीना गौतम

नदियां जीवनदायिनी होती हैं। नदी किनारे ही दुनिया की सभी सभ्यताएं व संस्कृतियां फली-फूली हैं। पूर्वोत्तर भारत की नदियों की बात करें, तो ब्रह्मपुत्र के बाद बराक नदी, दूसरी महत्वपूर्ण नदी है। बराक नदी के बारे में कहा जाता है कि यह केवल एक जलधारा नहीं है बल्कि एक जीवंत सभ्यता, संस्कृति और पारिस्थितिकी का आधार है।

उद्गम और अपवाह तंत्रः बराक नदी मणिपुर से निकलती है और असम की बराक घाटी से होकर बहती है। बराक घाटी से आगे बढ़कर यह बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है और वहां यह मेघना नदी घाटी तंत्र का हिस्सा बन जाती है। मणिपुर में जहां बराक नदी का जन्म होता है, वहां यह छोटी-छोटी धाराओं के रूप में आगे बढ़ती है और फिर आगे चलकर एक विशाल नदी का रूप ले लेती है। इसकी कुल लंबाई 900 किलोमीटर है और इसका प्रवाह क्षेत्र मणिपुर, मिजोरम और असम है। बांग्लादेश में घुसने के बाद यह दो धाराओं में बंट जाती है। एक सूरमा और दूसरा कुशियारा। जब यह मेघना नदी घाटी तंत्र का हिस्सा बनकर बंगाल की खाड़ी में गिरती है, उस समय यह भारत और बांग्लादेश के बीच एक महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय जलधारा का रूप ले लेती है।

पारिस्थितिकीय महत्वः बराक नदी का बेसिन जैव-विविधता का समृद्ध केंद्र है। घने वनों, वेटलैंड और मैदानों से भरपूर इलाकों से गुजरती बराक नदी, दर्जनों किस्म की मछलियों, सैकड़ों किस्म के बहुरंगी पक्षियों और मीठे अन्न की उपजाऊ फसलों का समृद्ध ठिकाना है। इस नदी में नियमित बाढ़ आती है। लेकिन यह बाढ़ यहां जितना प्रत्यक्ष नुकसान करती है, उससे कई गुना ज्यादा अपने साथ उर्वरक मिट्टी लाकर खेती का जरिया भी बनती है।

पूर्वोत्तर की कृषि-अर्थव्यवस्था में योगदानः पूर्वोत्तर के कृषि जीवन में इस नदी का योगदान ब्रह्मपुत्र नदी से भी ज्यादा है। असम के लाखों लोगों के जीवन जीने का यह मुख्य आधार है। धान, जूट और सब्जियों की खेती, इस नदी के उर्वरक मिट्टी की देन है। बाढ़ के कारण यह हर साल जो उपजाऊ मिट्टी लेकर आती है, वह एक तरह से उत्तर पूर्व का खाद्यान्न भंडार भरती है। असल में यह नदी जल परिवहन का भी महत्वपूर्ण हिस्सा है। बराक नदी केवल जल का नहीं बल्कि कृषि, रोजगार और आर्थिक स्थिरता का भी स्रोत है।

ऐ ति हा सि क - स मा जि क - सांस्कृतिक महत्वः बराक नदी के किनारे बसे गांवों में त्योहारों पर अकसर मेलों का आयोजन होता है, जो जल और प्रकृति दोनों के प्रति आस्था और श्रद्धा का आधार हैं। बराक नदी के किनारे बंगाली और दूसरे समुदायों का निवास है, जिनकी सांस्कृतिक पहचान में इस नदी का महत्वपूर्ण योगदान है। इतिहास में बराक नदी ने उत्तर-पूर्व को अन्य क्षेत्रों से जोड़ने का महत्वपूर्ण काम किया था। प्राचीन और मध्यकाल में यह व्यापारिक मार्ग रही है। सिलचर जैसा सांस्कृतिक शहर इसी नदी के किनारे विकसित हुआ है।

संरक्षण है जरूरीः उत्तर-पूर्व की यह दूसरी सबसे महत्वपूर्ण नदी कई तरह की समस्याओं, जैसे- प्रदूषण, अवैध रेत खनन, जलवायु परिवर्तन आदि का सामना कर रही है। यदि इसका संरक्षण न हुआ तो पूर्वोत्तर भारत की यह दूसरी जीवनरेखा संकट में पड़ सकती है। *